चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय

अवधारणा एवं कार्यप्रणाली

चित्रकूट धाम
पिन- ४८५३३१
जिला- सतना
मध्य प्रदेश

भारत ही केवल कर्म-भूमि है, अन्य भोग-भूमि हैं। भारत यूरोप, जापान, चीन नहीं है। इसकी नियति विशिष्ट है। इसे सम्पूर्ण संसार का मार्गदर्शन करना है, इसमें क्षमता है आत्म-शुद्धि की। आलसी की तरह लाचारी प्रकट करते हुए उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए कि पश्चिम की इस बाढ़ से मैं बच नहीं सकता। अपनी और दुनिया की भलाई के लिए इस बाढ़ को रोकने योग्य शक्तिशाली उसे बनना ही होगा। यह तपश्चर्या की अमर भूमि है। इसे अपनी नियति को स्वीकारना होगा। भारत के सामने इस समय अपनी आत्मा को खोने का खतरा है। और यह सम्भव नहीं है कि अपनी आत्मा को खोकर वह जीवित रह सके। इसमें अपना शुद्ध स्वरूप प्रगट करने की सहज क्षमता अभी भी है। भारत ने आत्म-शुद्धि के लिए स्वेच्छापूर्वक जैसा प्रयत्न किया है, उसका दुनिया में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। **भारत की आत्मा की मृत्यु सम्पूर्ण विश्व की मृत्यु है।**

- महात्मा गांधी

अनुक्रमणिका

१.	विश्वविद्यालय का उद्देश्य	२
	क) सर्वांगीण विकास	२
	ख) ग्रामीण पुनर्रचना	२
२.	क) शिक्षा क्षेत्र की वर्तमान अवस्था	४
	ख) शिक्षा क्षेत्र की वर्तमान आवश्यकता	४
३.	मूलभूत सिद्धान्त एवं स्थायी जीवन मूल्य	८
४.	शैक्षणिक विशेषताएं	१०
५.	क) शिक्षा विधि	१४
	ख) अनुसंधान	२५
	ग) प्रसार कार्य	२७
	घ) प्रशिक्षण	३३
	च) शिक्षा-अनुसंधान-प्रसार एवं प्रशिक्षण-समन्वय	३४
६.	ग्रंथालय	३५
७.	प्रशासनिक प्रबंध	३५
८.	उपसंहार	३६
९.	संकाय एवं विभागों की सूची	३६

चित्रकूट भारत की हृदय-स्थली है। केवल भौगोलिक कारण से नहीं, अपितु देशभर के नागरिकों के हृदय पटलों पर अंकित पुरुषोत्तम राम के प्रति अमिट भक्तिभाव के कारण। सत्तालोलुपता के वर्तमान वातावरण में यही एक ऐसा प्रेरणा स्त्रोत है जहां राम और भरत ने सिद्ध कर दिखाया था कि केवल सत्ता प्राप्ति ही महानता प्रदान नहीं करती। महानता प्राप्त होती है कर्तव्य तत्परता एवं समाज के प्रति समर्पित आचरण से। अतः देश का भविष्य बनाने वाली नई पीढ़ी को जीवन के समुचित पाठ पढ़ाने के लिए चित्रकूट सर्वोत्कृष्ट स्थान है। इसी विशेषता के कारण मंदाकिनी के पावन तट पर निसर्गरम्य परिसर में १२ फरवरी १९९१ को ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

विश्वविद्यालय का बोधवाक्य है ''विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम्''- ग्राम विश्व का लघुरूप है। ग्राम में बहुविध वनस्पतियां, पशु-पक्षी, जीव-जंतु तथा मानव सहित सभी प्राणी एक दूसरे को प्रभावित करते हुए देखने को मिलते हैं। यहां क्षितिज व धरती के मिलन का सुमंगल दर्शन संभव होता है, जो जीवन की व्यापकता का संदेश देता हुआ प्रकृति के सुखद सान्निध्य का अनुभव कराता है। सूर्य एवं चंद्रमा की गति का पेड़-पौधों, फसलों, जीव-जंतुओं तथा मानव जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। प्रकृति की विस्मयकारी प्रक्रियाओं की गतिविधियों के अखंड चक्र का अध्ययन यहीं संभव होता है, जो जीवन की परस्परपूरकता का अनुभव कराने की क्षमता एवं जीवन के समग्र तत्त्वों का साक्षात्कार कराते हुए जीवन के सभी पहलुओं के अध्ययन का सुअवसर प्रदान करता है।

भारतमाता ग्रामवासिनी है। अतः भारतीय शिक्षा में मौलिक सुधार लाने के लिए सर्वपल्ली डा. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित प्रथम शिक्षा आयोग (१९४९) ने ग्रामीण विश्वविद्यालय (रूरल यूनिवर्सिटी) स्थापित करने पर विशेष बल दिया था। आज तक इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाया गया है। सन् १९५४ और १९५९ में भारतीय तथा अमरीकी विशेषज्ञों के दो दलों की सिफारिशों के अनुसार १९६० में कृषि विश्वविद्यायलों की स्थापना का प्रस्ताव लागू किया गया था। परिणामस्वरूप भारत में २७ कृषि विश्वविद्यालय चल रहे हैं, किंतु ग्रामीण क्षेत्र के समग्र विकास का अति आवश्यक कार्य उपेक्षित पड़ा है। अतः दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा 'ग्रामोदय विश्वविद्यालय' की स्थापना की गई है।

१. विश्वविद्यालय का उद्देश्य

क) सर्वांगीण विकास

विकास चाहे ग्रामीण हो या नगरीय, उसके चार प्रमुख आयाम हैं- (क) शिक्षा, (ख) अनुसंधान, (ग) विस्तार एवं (घ) प्रशिक्षण। ग्रामोदय विश्वविद्यालय इन चारों आयामों पर समान रूप से बल देता है। ये चारों तत्त्व मानव के सर्वांगीण विकास के आधारभूत स्तंभ हैं। ग्रामीण अंचल के सर्वांगीण विकास के लिए इन तत्त्वों के आधार पर समन्वयात्मक कार्य करना आवश्यक है।

ख) ग्रामीण पुनर्रचना

(१) ग्रामीण जीवन की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक पुनर्रचना करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वर्तमान काल में शहरों में प्रचलित व्यावसायिक अर्थात् केवल धनार्जन के दृष्टिकोण से ग्राम प्रभावित न हों। उपभोग हर शरीरधारी की मूल प्रवृत्ति है। मानव उससे न वंचित रह सकता है न उसे वंचित रखना ही उचित है। संवेदनशीलता उसकी जन्मजात विशेषता है। यही विशेषता उसे सृष्टि के हर तत्त्व के साथ अभिन्नता की अनुभूति कराती है। यह अनुभूति ही मानव को प्राणिमात्र एवं प्रकृति के हित में अपने उपभोग पर संयम रखने की प्रेरणा प्रदान करती है। फलस्वरूप मानव सृष्टि के सभी अंगों में संतुलन बनाए रखने का दायित्व निभा सकता है, किंतु उसने स्वयं को केवल उपभोग तक ही सीमित रखा तो वह अपने बौद्धिक कौशल्य के द्वारा वासना तृप्ति हेतु

दूसरों के लिए पीड़ादायक एवं पर्यावरण के लिए विध्वंसकारी सिद्ध होता है।

वर्तमान अशांति का मूल कारण है उपभोगवाद का सब पर सवार होना। फलस्वरूप वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति सामाजिक जीवन में विषमता बढ़ाते हुए प्राकृतिक संसाधनों का विनाश कर रही है। इस घातक दिशा को ध्यान में रखकर संवेदनशीलता के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी जीवन की पुनर्रचना करना समय की आवश्यकता है। चारों ओर स्वस्थ व संपन्न ग्रामों के बिना सुखी शहरों की कल्पना करना अव्यावहारिक है। शहरीकरण की बढ़ती गति मानवीयता को (इन्सानियत को) नष्ट कर रही है। अतः प्रगति की दिशा को ग्रामोन्मुखी बनाए बिना धरती पर मानव जीवन को सुखी तथा सार्थक बनाना संभव नहीं है।

(२) मानव समाज के सुखानंदपूर्ण जीवन का विश्वव्यापी निर्माण करने के लिए जाति-पांति, मजहब (संप्रदाय), लिंगभेद या राजनीतिक विभिन्नताओं के होते हुए प्राचीन काल में अपने यहां एकता व एकात्मता का आदर्श अर्थात् 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुख भाग्भवेत्' की भावना को व्यावहारिक जीवन में चरितार्थ करने की दिशा में अग्रसर होने की मानसिकता सक्रिय थी। उसी दिशा को अपनाकर चलना आज की आवश्यकता है। विश्वव्यापी मानवीय जीवन एकात्म एवं अविभाज्य है। अतः विश्वव्यापी सुख-शांति के बिना कोई देश, समाज, परिवार या व्यक्ति निश्चिंत व सुखी नहीं हो सकता। हिंदुस्थान का अनंतकाल से आदर्श रहा है- विश्व शांति और सौख्य प्राप्ति। वह संपूर्ण सृष्टि के कल्याण की कामना करता है। अतः यह विश्वविद्यालय सभी जातियों, सभी मजहबों (संप्रदायों) तथा सभी अंचलों की महिलाओं तथा पुरुषों का आह्वान करता है कि वे इस विश्वविद्यालय के विकास में सहभागी बनें। विश्वविद्यालय की बहुआयामी गतिविधियों में सभी के अनुभव, क्षमता व कुशलता का स्वागत है।

२. क) शिक्षा क्षेत्र की वर्तमान अवस्था

प्राध्यापक-प्राध्यापिकाएं विश्वविद्यालयों के विकास के लिए तथा अपनी आजीविका के लिए सर्वथा शासकीय अनुदानों पर निर्भर रहती हैं। बने बनाए नियमों की चौखट में रहकर उन्हें अध्यापन कार्य करना पड़ता है। चाहने पर भी छात्र-छात्राओं को स्वावलंबन की क्षमता अर्जित करने और

अपने नव-स्वतंत्र देश के नव-निर्माण में देशप्रेमी नागरिकों के नाते भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करने की उन्हें स्वतंत्रता नहीं है। अध्यापन कार्य में संलग्न ये गुरुजन युगानुकूल सामाजिक एवं आर्थिक पुनर्रचना के कार्य से पूर्णतः अलग-थलग पड़े हुए हैं। यद्यपि यही वह वर्ग है जो नई पीढ़ी को उपर्युक्त दिशा में गतिशील बना सकता है।

परिणामस्वरूप उच्चस्तरीय शिक्षा आयोगों एवं विभिन्न समितियों के सुझावों का लाभ आजादी का लंबा काल बीतने पर भी चिरवांछित शिक्षा-पद्धति विकसित करने में नहीं हो पाया। विश्वविद्यालयों से तथा अन्य प्रतिष्ठानों से विभिन्न प्रकार की उपाधियां प्राप्त अधिकांश युवक-युवतियां बिना नौकरी के अपने कुटुंब का भी भरण-पोषण करने में असमर्थ हैं। यही कारण है देश में गरीबी एवं बेकारी के बेकाबू होने का।

राष्ट्र जीवन के लिए एक और समस्या बहुत खतरनाक बनती जा रही है। वह है - पढ़े-लिखे लोगों में निरंतर वृद्धिगत स्व-केंद्रित वृत्ति। यह संकुचितता इतनी व्यापक और गंभीर बनती जा रही है कि कुटुंब के घटकों में पाई जाने वाली आत्मीयता तथा परस्परपूरकता भी मिट रही है। हर क्षेत्र में और हर स्तर पर विघटन की विभीषिका ने सामाजिक जीवन को जर्जर बना दिया है। राष्ट्रीय-स्तर पर कार्यरत 'नेशनल इंटीग्रेशन काउंसिल' भी परिणामशून्य औपचारिकता मात्र बनकर रह गई है। छोटी-बड़ी सभी आबादियों में विश्वासपात्र अर्थात् सर्वमान्य व्यक्तियों का अभाव हो गया है। देश को सब प्रकार से उन्नत बनाने तथा सुरक्षित रखने का दावा करने वाले दल भी आपसी गुटबाजी से त्रस्त हैं। इस चिंताजनक परिस्थिति का प्रमुख कारण है - प्रचलित शिक्षा-पद्धति में स्व-केंद्रित वृत्ति का पनपना।

शिक्षा-क्षेत्र की इतनी अवनति हुई है कि विश्वविद्यालय उपाधियों के वितरण-केंद्र मात्र बने हैं। जिस विषय की उपाधि पाई जानी है, उस विषय का छात्र-छात्राएं गहन अध्ययन कर ज्ञानार्जन करें, इसकी किसी को चिंता नहीं है। उपाधियां पाने के तौर-तरीके कितने निम्न स्तर तक पहुंचे हैं, यह सर्वविदित है।

२. ख) शिक्षा क्षेत्र की वर्तमान आवश्यकता

उपर्युक्त दयनीय दशाओं से शिक्षण या प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्थाओं को मुक्त किए बिना तथा उन्हें ठीक दिशा में गतिशील बनाए बिना भारत का भविष्य बनाने के प्रयासों को अपेक्षित सफलता मिलना संभव नहीं है। आजादी के बाद किए गए विकास कार्यों के परिणामों का

यह स्पष्ट संकेत है। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर ही वर्तमान काल की आवश्यकतानुसार शिक्षा-पद्धति विकसित करने के लिए 'दीनदयाल शोध संस्थान' ने 'चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय' का प्रकल्प प्रारंभ किया है।

(१) अध्ययन प्रणाली : विश्वविद्यालय में या अन्य प्रतिष्ठानों में पढ़ाए जाने वाले सभी विषय सामाजिक जीवन को समुन्नत बनाने की विधियों के अभिन्न अंग हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में छात्र-छात्राएं अपने विद्याध्ययन के काल में अपने विषय की व्यावहारिकता का अनुभव प्राप्त नहीं कर पाते। अतः वे अपने विषय के न मर्मज्ञ बनते हैं, न उस विषय के सामाजिक महत्व को ही समझ पाते हैं। यह कार्य केवल कक्षान्तर्गत प्रवचन-प्रणाली से संभव नहीं होता। अतः इस विश्वविद्यालय के संकायों के प्राध्यापकगण अपने छात्र-छात्राओं को अपने-अपने विषय का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने के लिए सामाजिक जीवन से जोड़कर प्रयोगात्मक कार्यक्रमों में अपने साथ संलग्न करें यह आवश्यक है।

(२) स्वावलंबन की विधि : स्वावलंबन केवल सैद्धांतिक या वैचारिक विषय नहीं है। उसकी क्षमता अर्जित करने के लिए स्वावलंबन की विधियों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना आवश्यक है। अतः इस विश्वविद्यालय के प्राध्यापक-प्राध्यापिकाएं, छात्र-छात्राएं तथा शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यों में संलग्न कार्यकर्तागण मिलकर आगामी पंद्रह वर्ष की कालावधि में अपने विश्वविद्यालय को आर्थिक दृष्टि से स्व-पुनरोत्पादक आर्थिक विधि (सेल्फ रिजनरेटिंग एकोनामी) का विकास करते हुए आत्मनिर्भर बनाने के लिए कृतसंकल्पित हैं। पंद्रह वर्ष के बाद इस विश्वविद्यालय को अपने विकास के लिए तथा प्राध्यापक-प्राध्यापिकाओं या अन्य कार्यकर्ताओं की आजीविका के लिए किसी से दान या सरकारी अनुदान पर निर्भर रहना नहीं पड़ेगा। छात्र-छात्राओं को भी (ग्यारहवीं कक्षा से) अपने विद्याध्ययन के काल में आर्थिक सहायता के लिए अपने अभिभावकों पर निर्भर रहना नहीं होगा, अपितु स्नातक बनकर विश्वविद्यालय से विदाई लेते समय उनके पास अपनी कार्यक्षमता के अनुसार स्व-अर्जित पूंजी अवश्य रहेगी।

(३) विश्वविद्यालय परिवार परिसर : मानव संपूर्ण सृष्टि का एक अभिन्न अंग मात्र है। उसका जन्म स्व-केंद्रित बनकर रहने के लिए हुआ ही नहीं है। उदाहरणार्थ- वह बिना प्राणवायु के क्षणमात्र के लिए भी जी नहीं सकता। प्राणवायु के लिए उसे सर्वथा पेड़-पौधों पर निर्भर रहना पड़ता है।

अतः जीवित रहने के लिए मानव को वृक्ष संवर्धन करना अनिवार्य है। प्रकृति के इस परस्परपूरकता के निसर्गजन्य सिद्धांत को समझकर मानव को तदनुसार अपना व्यावहारिक जीवन विकसित करना होगा। अन्यथा निसर्ग का संतुलन बिगाड़कर वह अपने जीवन के लिए ही खतरा निर्माण करने लगा है। इस मर्म को जानकर 'चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय' ने चित्रकूट धाम को केंद्र बनाकर चारों ओर के पचास किलोमीटर के अंतर्गत आने वाली सभी आबादियों को, पशुओं को, छोटे-बड़े पहाड़ों को, नदी-नालों को, ताल-तलैयाओं को, वनों-उपवनों को, उपजाऊ तथा अन-उपजाऊ भूमि को विश्वविद्यालय ने अपनी प्रयोगशाला माना है अर्थात इन सभी बातों का समुचित विकास करने का स्वप्रेरणा से दायित्व स्वीकार किया है। इसी से नई पीढ़ी के जीवन में स्व-केंद्रित संकुचितता के स्थान पर निसर्गजन्य परस्पर-पूरकता का व्यापक दृष्टिकोण विकसित होगा।

भारत के सभी प्रदेशों से विभिन्न भाषाओं के विद्वानों को अध्यापन कार्य के लिए प्राध्यापक-प्राध्यापिकाओं के रूप में तथा छात्र-छात्राओं को अध्ययन के लिए इस विश्वविद्यालय में प्रविष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे उपर्युक्त व्यापक जीवन दृष्टि देशभर की नई पीढ़ी में निर्माण हो सकेगी।

सभी छात्र-छात्राओं को अपनी रुचि के विषयों का अध्ययन करते हुए प्राध्यापक-प्राध्यापिकाओं के साथ परिवार परिसर के सर्वांगीण विकास में सक्रिय योगदान देना होगा। इसी से उनके जीवन में व्यापकता एवं सर्वहितकारी दृष्टिकोण के साथ सामाजिक कार्य में रुचि एवं सुखानंद अनुभव करने की वृत्ति विकसित होगी, जो देश के नवनिर्माण के लिए आवश्यक है। इसी से अध्यापन का दायित्व निभाने वाले गुरुजनों के साथ कार्यानुभव की भट्ठी में से निखरकर इस विश्वविद्यालय के स्नातक प्रतिभाशाली एवं आत्मनिर्भर नागरिक सिद्ध होंगे। इसी विधि से पुरातनतम किंतु नव-स्वतंत्र भारत का सर्वांगीण विकास करने वाली चिरवांछित शिक्षा-प्रणाली विकसित होगी। परस्परपूरकता के प्राकृतिक सिद्धांत का यह व्यापक परिसर एक जीता-जागता नमूना बन संपूर्ण विश्व के आकर्षण का केंद्र बनेगा।

२. ग) विश्वविद्यालयों का दायित्व

राष्ट्रजीवन की आधारभूत इकाई ग्राम है। ग्रामों से लेकर संपूर्ण राष्ट्रजीवन की पुनर्रचना करना समय की आवश्यकता है। नालंदा तथा

तक्षशिला विश्वविद्यालयों के आधुनिक संस्करणों के रूप में वर्तमान विश्वविद्यालय सार्वत्रिक सुख एवं संपन्नता से सामाजिक जीवन को परिपूर्ण करें। यह कार्य तभी संभव है जबकि वर्तमान-काल में बढ़ रही विघटनकारी प्रवृत्तियों तथा अलगाववादी तत्वों का निर्मूलन हो। नई-पीढ़ी के अध्ययन-केंद्र इस दिशा में सक्रिय बनाए गए तो वे ही इन विकट समस्याओं को अपने कर्तृत्व से सुअवसरों में परिवर्तित कर सुख और शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय ही अपने छात्र-छात्राओं तथा परिजनों में इस धारणा को दृढ़मूल कर सकते हैं कि समाज के विभिन्न अंगों का संबंध जैविक अवयवों की भांति ही होना आवश्यक है। समाज के विभिन्न अंगों में उसी प्रकार परस्परपूरकता का व्यवहार प्रचलित होना चाहिए जैसे शरीर के विभिन्न अंगों में एक सी चेतना प्रवाहित होती है। फलस्वरूप ये अंग अपने-अपने विशिष्ट दायित्व निभाते रहते हैं। दायित्वों में विभिन्नता होते हुए भी उनमें अंतर्विरोध नहीं होता। शरीर-तंत्र इतना समरसतापूर्ण है कि किसी भी अंग को हो रहे कष्ट की सूचना तत्काल संपूर्ण शरीर में संचारित होकर शरीर का उपयुक्त अवयव अविलंब उस कष्ट को दूर करने हेतु कार्यरत होता है। ऐसा ही सामंजस्यपूर्ण सूचना-तंत्र समाज के विभिन्न अंगों के मध्य सक्रिय होना चाहिए। तभी समाज अर्थात् राष्ट्र अपने अस्तित्व, रक्षा तथा विकास को सुनिश्चित कर सकेगा। आधुनिक साधनों के माध्यम से यह कार्य और भी अधिक सुगम व परिणामजनक बनाया जा सकता है।

यह विश्वविद्यालय अपने छात्रों, प्राध्यापकों एवं क्षेत्रीय निवासियों में ऐसी ही चेतना जगाने की दिशा में कार्य कर रहा है। प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक विकास के सृजनात्मक कार्य का अभिन्न अंग होना चाहिए। समाज का कोई घटक उत्कृष्ट अथवा निकृष्ट नहीं है। सभी लोगों में वैसा ही रागात्मक सामंजस्य परिवार से ग्राम, ग्राम से क्षेत्र तथा क्षेत्र से देश तक उत्तरोत्तर समान रूप से प्रवाहित करना विश्वविद्यालयों का दायित्व है।

संपूर्ण संसार में रहने वाला हर एक मानव, मानव समाज के साथ आबद्ध होते हुए भी अपनी व्यक्तिगत विशेषता बनाए रख सकता है। फिर भी समाज के विभिन्न घटकों में संतुलित परस्परपूरकता बनाए रखने के लिए अनेक अंतर्माध्यमिक प्रतिबद्धताओं को व्यावहारिक रूप में विकसित करना होगा। ये प्रतिबद्धताएं व्यक्ति से लेकर राष्ट्र तक की समरसता के प्रवाह में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न न करें। उपरोक्त भावना को व्यक्ति-व्यक्ति, परिवार-परिवार, समूह-समूह तथा देशव्यापी स्तर पर विकसित करना

'चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय' अपना आद्य कर्तव्य मानता है।

प्राचीनकालीन नालंदा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालयों के समान अपेक्षित है कि आज के भारतीय विश्वविद्यालय अपने से संबंधित क्षेत्रों में मानवीयता एवं परस्परपूरकता के प्रकाश-स्तंभ बनें। इसी से छात्र-छात्राओं में राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध एवं उत्तरदायित्व की भावना जागृत होगी। यही एकमेव मार्ग है जिसके द्वारा हिंसा, अलगाववाद, तथा आतंकवाद का निर्मूलन संभव है। इसी विधि से विश्वविद्यालयों की कार्यक्षमता का परिचय उनके क्षेत्रों की प्रगति से प्रकट होता रहेगा। इस कार्य शैली के विकास के लिए आधुनिकतम तकनीकी व नवीनतम ज्ञान का समुचित उपयोग करना अनिवार्य है। तभी छात्र-छात्राओं को ज्ञान की व्यवहारिकता एवं व्यापकता की अनुभूति होगी। इसी विधि से नई पीढ़ी के सभी युवक एवं युवतियां स्वावलंबी बनेंगे। समाज के समस्त वर्गों तथा सभी पुरातन एवं अधुनातन माध्यमों के मध्य अन्योन्याश्रितता पर आधारित एक सुखद एवं सनातन आधार का नव निर्माण होगा।

इस प्रकार के प्रत्येक व्यक्ति एवं समूह के सहयोग से प्राचीन दिशा-दर्शन व अर्वाचीन तकनीकी के संगम की आधारशिला पर राष्ट्र की भव्य व टिकाऊ अट्टालिका खड़ी होगी और भारतीय विश्वविद्यालयों की शिक्षा-पद्धति सार्थक सिद्ध होकर विश्व के विद्यालयों के लिए अनुकरणीय बनेगी।

३. मूलभूत सिद्धांत एवं स्थायी जीवन मूल्य

(१) सादगीपूर्ण जीवन ही विश्वव्यापी सुखशांति का आधार है। संपत्ति का आडंबर या भुखमरी मानसिक विकृति एवं अन्यायपूर्ण प्रवृत्ति का परिणाम है। प्रकृति के साथ समरसता मानव जीवन की स्वस्थ अवस्था एवं सार्थकता की कुंजी है। निष्काम कर्म की भावना महान् उपलब्धियों का साधन है। अतः प्रचलित जीवन यापन की शैली में परिवर्तन करना नितांत आवश्यक है। उपभोग प्रेरित जीवन तथा समाज से अपने लिए लाभ उठाने की प्रवृत्ति के स्थान पर नागरिकों में अन्यों के प्रति सद्भावना, सहयोग तथा पूरकता का जीवन विकसित किए बिना किसी के लिए भी सुख-शांति संभव नहीं हो सकती। अधिकतम उत्पादन करने तथा उपभोग में संयम बरतने से ही मानव मात्र का कल्याण संभव है।

(२) प्राणिमात्र के लिए सुरक्षा उपलब्ध कराना भारत की परंपरा रही है। परा-औद्योगिक सौर सभ्यता के साथ इसी आदर्श का सामंजस्य बैठ सकता

है। आर्थिक व राजनीतिक विकेंद्रीकरण की सर्वहितकारी (सर्वभूत हिते रताः) व्यवस्था ही समाज की सुस्थिति एवं उन्नति के लिए सर्वोपयुक्त साधन है।

(३) विद्यालय अपने प्रत्येक विद्यार्थी के चतुर्दिक् विकास (शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा) पर बल दें तो सभ्यता परमोच्च स्थान पा सकती है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना अलग ही व्यक्तित्व होता है। हर एक में कोई न कोई विशेष गुण विद्यमान होता है। अतः किसी एक भी व्यक्ति के विकास की संभावना उपेक्षित होती है तो पूरे समाज की हानि होती है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है।

(४) स्वप्रेरणा से समाज सेवा में रत व्यक्ति श्रेष्ठत्व पाता है। ज्ञान यदि निजी हित तक ही सीमित रहा तो वह समाज में विषमता का कारण बनता है। ज्ञान की सृजनात्मक शक्ति तभी प्रकट होती है जब वह जनसामान्य के काम आती है। व्यक्ति यद्यपि परिवार (समाज की मूलभूत इकाई) में जन्म पाता है, किंतु समाज के सहारे ही उसका विकास एवं जीवन-निर्वाह होता है। अतः उसका कर्तव्य है कि वह समाज के लिए पूरक बने। औरों के लिए काम करने से ही व मानवीयता से विभूषित होकर आत्मसंतोष का अनुपम सुख पाता है। वस्तुतः मानव जीवन की यह विशेषता उसमें विद्यमान रहती है, किंतु उपभोगवादी वातावरण से घिरा मानव स्व-केंद्रित व अनैतिक बन पशुवत् व्यवहार करता है। ऐसे व्यक्तियों को मन ही मन लगने लगता है कि अन्य सभी लोग उसके विरुद्ध हैं। उसकी स्व-केंद्रित प्रवृत्ति उसके अपने परिवार में भी विघटन का कारण बन रही है। जो व्यक्ति जितना ही शुद्ध हृदय एवं समाजसेवी होता है, उसे मानवजीवन के रहस्यों का उतना ही अधिक साक्षात्कार होता है। इसी से वह मानवीयता के उच्चतम शिखर पर पहुंच सकता है।

(५) ज्ञान केवल बौद्धिक गतिविधियों तक ही सीमित नहीं होता। भावोत्कर्ष का भी माध्यम वही है। एक पक्षी के करुण-क्रंदन ने वाल्मीकि के हृदय को झकझोरा था। उसी से उनमें अमर काव्य का प्रवाह प्रस्फुटित हुआ था। कालिदास की सौरभमयी रचना की सृष्टि का कारण बनी उनकी अन्तरतम की भावनाओं पर पहुंची गहरी चोट, भगवान बुद्ध तथा ईसामसीह को परमज्ञान की प्राप्ति तब हुई जब उनका हृदय भावुकता से उद्वेलित हो उठा। ज्ञान की सिद्धि बुद्धि एवं भावनाओं के आवेगों के संगम का ही सुपरिणाम है। अतः **'चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय'** तथा उसके अंतर्गत चलने वाले विभिन्न संस्थानों एवं केंद्रों के शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों

के जीवन में उपस्थित होने वाले ऐसे मिलन प्रसंगों को प्रोत्साहित कर नई पीढ़ी की रचनात्मक ज्ञान-सिद्धि का मार्ग प्रशस्त किया जाएगा।

(६) प्रेम और त्याग मानव जीवन के मूलभूत तत्व हैं। इन तत्वों का संस्कार पारिवारिक जीवन में प्राप्त होता है। त्याग की भावना जीवन में अनोखा आनंद प्रदान करती है। संतान के लिए आवश्यक कष्ट सहने और त्याग करने में माता-पिता असीम सुखानंद पाते हैं। सही भावना अन्यों के लिए पूरक बनने के सुसंस्कारों की अद्वितीय क्षमता रखती है। मानव अन्यों के लिए त्याग करता है तो वह आत्मोन्नति एवं अलौकिक आनंद से आत्मविभोर होता है। उपनिषद् का निर्देश है - 'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' (उसे त्यागकर उपभोग करो) अनुभवसिद्ध पुरातन विचारकों का कहना है कि 'त्यजेत् एकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्, ग्रामं, जनपदस्यार्थे,आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्' (व्यक्ति परिवार के हित में, परिवार ग्राम के हित में, ग्राम जनपद के हित में त्याग करे तथा आत्मतत्त्व के लिए सर्वस्व का बलिदान करे)। भारत की यह स्वानुभूत पुरातन शिक्षा मानव मात्र की उन्नति की अनमोल धरोहर है। इस अनूठे ज्ञानार्जन की विधि से पीड़ा नहीं होती, अपितु संतोषयुक्त सुख प्राप्त होता है। आज का व्यापार प्रधान व उपभोगप्रेरित वातावरण इस असीम सुखानंद प्राप्ति के अनुभूत मार्ग का उपहास कर भविष्य बिगाड़ रहा है। चारों ओर निरंतर बढ़ रही अनैतिकता, भ्रष्टाचार, आतंक, हत्याएं एवं बलात्कार की बाढ़ उसी का दुष्परिणाम है।

अतएव अपनी चिर पुरातन किंतु नित्य नूतन रह पाने की क्षमता रखने वाली संस्कृति व शिक्षा के स्थाई तत्वों की खोजकर उनका वर्तमान संदर्भ में व्यावहारिक रूप विकसित करना समय की आवश्यकता है। 'चित्रकूट **'ग्रामोदय विश्वविद्यालय'** इस आवश्यकता की पूर्ति करते हुए नूतन पीढ़ी को मां की गोद से लेकर स्नातकोत्तर तथा उससे भी अधिक उच्च अध्ययन की सुविधाएं उपलब्ध कराने का आकांक्षी है।

४. विश्वविद्यालयों के आदर्श- स्वावलंबन व अन्य विशेषताएं

भारत के सर्वांगीण विकास के लिए ग्रामीण अंचल की युगानुकूल पुनर्रचना करना वर्तमान काल की प्राथमिक आवश्यकता है। नालंदा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालयों के समान अपने कार्यक्षेत्र के सर्वसाधारण निवासियों में संवेदनशीलता, नैतिकता तथा परस्परपूरकता की भावना अंकुरित व प्रचलित करने की प्रक्रिया में विश्वविद्यालयों की संलग्नता ही

शिक्षार्थियों में सामाजिक दायित्व की भावना विकसित करेगी। तभी देश की एकता व अखंडता के लिए खतरा बने एवं हिंसाचार में जुटे विघटनकारी तत्वों का निर्मूलन संभव होगा।

विश्वविद्यालयों का दायित्व है कि वे जनजीवन में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के निराकरण के उपाय खोजें। इन खोजों की परिणामजनकता जानने के लिए अपने कार्यक्षेत्र में अपनी खोजों का व्यावहारिक धरातल पर परीक्षण करें और उन्हें सर्वांगपूर्ण बनाएं। शिक्षा एवं शोध के साथ-साथ आधुनिक वातावरण के अनुकूल प्रशिक्षण एवं प्रसार पर भी बल देना आवश्यक है। इस प्रक्रिया के माध्यम से ही शिक्षार्थियों को अपने विषयों का अर्थपूर्ण एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा, सामान्य लोगों में भविष्य के प्रति आत्मविश्वास जगेगा, पुरातन एवं नूतन पीढ़ी में सामंजस्य स्थापित होगा, जिससे स्वावलंबनपूर्ण जीवन का सूत्रपात हो सकेगा। विश्वविद्यालयों द्वारा इस प्रकार विकसित शिक्षा देश-विदेश में लोकप्रिय व अनुकरणीय बनेगी। इस उद्देश्य-पूर्ति के लिए निम्न अभिनव कार्यक्रम निश्चित किए गए हैं :

(१) यह सर्वमान्य है कि शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम है। शिक्षाप्राप्ति द्वारा ही शिक्षार्थी अपनी शारीरिक, बौद्धिक, भावात्मक एवं आध्यात्मिक उन्नति करता है। किंतु प्रचलित शिक्षा-पद्धति में इस मान्यता के लिए कोई गुंजाइश नहीं है।

शरीर आत्मा का मंदिर है (शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्) शरीर का, आंतरिक जीवनदायी प्रेरणा का, विवेक-बुद्धि का, कल्पनाशक्ति का तथा सबके साथ तादात्म्य का विकास ही मानव का विकास है। शिक्षा तभी पूर्ण मानी जानी चाहिए जब शिक्षार्थी अपने अंदर पावित्र्य, सौंदर्य एवं व्यापक जीवनदृष्टि का साक्षात्कार करें। इसी में शिक्षा की एवं विद्यार्थी-जीवन की सार्थकता है तथा देश का एवं मानव मात्र का भविष्य सन्निहित है।

(२) यह विश्वविद्यालय पूर्णरूपेण सचेत है कि शिक्षा अनुदेश (इंस्ट्रक्शन) तक सीमित नहीं होती। अनुदेश वस्तुतः जानकारी प्रदान करने मात्र का काम करता है। इसी एक बात पर बल होने के कारण वर्तमान संस्थाएं जानकारी बेचने की दुकानें मात्र बनी हुई हैं और विद्यार्थी वर्ग बना है संवेदनशून्य ग्राहक। इसी कारण वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था में व्यक्ति बिना शिक्षित हुए जानकारी का पुलिंदा मात्र बन जाता है।

वस्तुतः शिक्षा रचनात्मक प्रक्रिया है। उसमें निरंतर जिज्ञासा जगती है और जगाई जाती है। शिक्षा में खोजपूर्ण प्रश्न उपस्थित कर उनका समाधान

खोजना होता है। स्वनिर्देशित प्रयासों द्वारा ज्ञानार्जन करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में अध्यापक मूलतः उत्प्रेरक तथा सहायक की भूमिका निभाता है। स्व-अर्जित ज्ञान अनपेक्षित संकटमय परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त करने की क्षमता बढ़ाता है। अतः यह विश्वविद्यालय तथा इसके अंतर्गत चलने वाले विभिन्न कार्य शिक्षा प्रदान करने की प्रचलित विधि अपनाने के स्थान पर स्व-अर्जित ज्ञान प्राप्ति की विधियां विकसित करेगा। प्राध्यापकों की भूमिका विशेष रूप से शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करने तथा उनकी अध्ययन में निरंतर रुचि बढ़ाने की रहेगी। यह सामान्य प्रशिक्षण से अधिक श्रमसाध्य कार्य है। ज्ञानार्जन की इस प्रक्रिया से अध्यापकों का प्रत्येक विद्यार्थी से निकटतम संपर्क तथा विद्यार्थियों के साथ अधिक सहकारिता बढ़ेगी, जिसका प्रचलित शिक्षा-पद्धति में अभाव है।

(३) इस विश्वविद्यालय की सुविचारित मान्यता है कि 'हाथ से काम करते हुए सोचना' व 'अपनी सोच को कार्यान्वित करना' निपुणता प्राप्ति का एकमेव मार्ग है। हाथ और मस्तिष्क की सम्मिलित प्रक्रिया ही गहन ज्ञान प्राप्ति का साधन है। अनेक नए विचार उस समय प्रस्फुटित होते हैं जब व्यक्ति कार्यरत रहता है। कार्य करते हुए सोचने से बहुत से प्रश्न उपस्थित होते हैं। उनका निराकरण कई बार काम की प्रक्रिया के साथ ही होता है। इसी से विभिन्न विषयों का उच्चस्तरीय ज्ञान अल्पावधि में प्राप्त होता है, जो स्थाई रूप से स्मृति पटल पर अंकित होता है।

अपना देश किसी काल में इसी रूप में शिक्षा प्रदान करता रहा है। परिणामतः कार्य की पूजा होती थी, किंतु तथाकथित आधुनिकता के प्रभाव में यह विशेषता मिट गई है। परिणामस्वरूप, श्रम की प्रतिष्ठा समाप्त हुई है। जीवन निर्वाह श्रम की उत्पादकता पर निर्भर करता है, इस तथ्य को भुला दिया गया है। महात्मा गांधी ने श्रम का सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि रोगी एवं अशक्त व्यक्तियों को छोड़कर अन्य सभी लोगों को उचित मात्रा में उत्पादक श्रम करना नितांत आवश्यक है, अन्यथा खाने वालों की संख्या बढ़ती रहेगी व उत्पादक श्रमशील लोगों की संख्या घटती जाएगी, जिससे सामाजिक जीवन में असंतुलन व विषमता बढ़ेगी। यह विश्वविद्यालय उपर्युक्त वस्तुस्थिति को ध्यान में रखकर ज्ञानार्जन एवं श्रमसाधना की एकात्म शिक्षा-पद्धति विकसित करेगा।

(४) किंतु यह विश्वविद्यालय केवल रोजगारोन्मुखी शिक्षा-पद्धति को उपयुक्त नहीं मानता। ऐसा प्रशिक्षण मानव को केवल अर्थोपार्जन तक सीमित रखता है। केवल किसी एक विशेष प्रकार के कार्य करने के लिए

मशीनी कुशलता सिखाने से मस्तिष्क की कल्पनाशक्ति एवं सृजनशीलता अवरुद्ध होती है। यह विश्वविद्यालय अनुभव करता है कि अन्य उपलब्धियों के साथ-साथ सच्ची शिक्षा अनेक प्रकार के जीवनोपयोगी कार्य करने की प्रतिभा विकसित करती है। अतएव विश्वविद्यालय का प्रयास होगा कि प्रत्येक विद्यार्थी में यह चेतना उत्पन्न हो कि पर्याप्त वेतन वाले पदों पर पहुंचने के लिए डिग्री प्राप्त करना मात्र शिक्षा-प्राप्ति का लक्ष्य नहीं है। यह विश्वविद्यालय वेतनभोगी वृत्ति का युवा वर्ग निर्माण करने के लिए डिग्री प्रदान करने वाले पाठ्यक्रम तक स्वयं को सीमित नहीं रखेगा, अपितु विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व-विकास को प्राथमिकता देगा। फलस्वरूप डिग्री प्राप्त युवक या युवती कठिन से कठिन प्रसंगों में भी अडिग रहकर अपने स्वावलंबन एवं स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं करेंगे।

(५) वस्तुतः ग्रामीण पुनर्रचना केवल विज्ञान और तकनीकी शिक्षा तक सीमित नहीं है। यद्यपि उत्पादन में वृद्धि करने का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है, तथापि इतना ही साध्य मानव के लिए पर्याप्त नहीं है। मानव के सर्वांगीण विकास के दो पहलू हैं। **गोल्डस्मिथ की प्रसिद्ध उक्ति है कि ''वह देश विनाश की दिशा में गतिमान होता है, जहां संपन्नता तो बढ़ती है, किंतु मानवीयता का ह्रास होता है।''** यह अर्थपूर्ण चेतावनी इस विश्वविद्यालय को अपनी दिशा का चयन करने में सहायक सिद्ध हुई है। विश्वविद्यालय इस बात से सतर्क है कि मानव एक विशेष प्रकार का प्राणी है। उसकी जड़ें धरती में अवश्य हैं, किंतु उसमें ऐसी अंतर्निहित क्षमता है जिससे वह स्वर्ग की ऊंचाई प्राप्त कर सकता है। मानव में ऐसी कमजोरियां भी हैं जो उसे निम्नतम स्तर तक ले जा सकती हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वर्तमान तकनीकी प्रगति की उपेक्षा हो। तकनीकी प्रगति का मानवीय जीवनमूल्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करना ही समय की आवश्यकता है। यह विश्वविद्यालय इसी दिशा में गतिशील है।

शिक्षा का उद्देश्य है 'सर्वे भवंतु सुखिनः' का भाव मानव के व्यावहारिक जीवन में उतारना। उसकी अधोगति की दिशा बदलकर उसे उदात्तता से अलंकृत करना। इसी ध्येय की प्राप्ति के लिए 'चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय' की स्थापना हुई है। विश्वास है कि ग्रामीण परिवेश तथा चित्रकूट का पावन परिसर इस कार्य में हमें सहायक सिद्ध होगा। इसके अतिरिक्त एक और भी आवश्यकता है। **लुईस ममफोर्ड ने कहा था- ''मानवीयता के समग्र आयामों से युक्त मानव के निर्माण के लिए संपूर्ण विश्व समाज का सहयोग जरूरी है।''** 'चित्रकूट ग्रामोदय

विश्वविद्यालय' भारत के सभी अंचलों से तथा विश्व भर की प्रतिभाओं से सक्रिय सहयोग पाने के लिए सदैव कार्यरत रहेगा।

५. (क) अभिकल्पित कार्य विधि :

विकास की प्रक्रिया चाहे नगरीय हो या ग्रामीण- उसके चार अनिवार्य अंग है। (१) शिक्षा (२) अनुसंधान (समस्याओं के निराकरण एवं समयानुकूल नवीन विधियों के अनुप्रयोग हेतु), (३) विस्तार और (४) प्रशिक्षण। यह चार पहलू विकास के आधार स्तंभ हैं। किंतु इन चारों को ठीक से समन्वित कर उन्हें सृजन की बहुआयामी आवश्यक प्रक्रियाओं की दिशा में गतिशील करने के लिए अभी तक समुचित प्रयास नहीं हो पाए हैं। अतः यह विश्वविद्यालय उपरोक्त चारों पहलुओं पर समान रूप से बल देता है। उपरोक्त पहलुओं पर आधारित कार्यों का विस्तृत विवेचन आगामी पृष्ठों पर खंड क, ख, ग, घ तथा च में अंकित है। शिक्षा जगत में जैसे शिक्षित व्यक्ति अनुसंधानकर्ता हो सकता है उसी प्रकार से कभी अनुदेशक या प्रशिक्षु अथवा शिष्य भी अनुसंधानकर्ता बन सकता है।ये समस्त भूमिकाएं व उनके कार्य इस प्रकार एक दूसरे से गुंथे हुए हैं कि उनका समाहरण अवश्यंभावी है। इसी माध्यम से पूर्ण शिक्षित व्यक्तित्वों का निर्माण होगा।

समस्त प्रक्रियाओं को, अर्थात शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार व प्रशिक्षण, ऐसे चार भागों में विभाजन करने का उद्देश्य मात्र इतना ही सुनिश्चित करना है कि कोई भी पहलू कम अथवा अधिक महत्ता प्राप्त न करे। विश्वविद्यालय यह कदापि नहीं चाहता कि इस प्रक्रिया में व्यक्ति का कार्य क्षेत्र इतना निर्दिष्ट हो जाय कि उसका व्यक्तित्व विशिष्ट दिशा में ही प्रवाहित होकर अपनी व्यापक दृष्टि खो बैठे। इससे व्यक्ति की केवल अपनी क्षमताओं का ही ह्रास नहीं होता, अपितु नवीनता के अभाव में वह यांत्रिक प्रक्रिया का शिकार हो जाता है। परिणास्वरूप दीर्घावधि में उसकी गुणवत्ता घटने लगती है।

इस विश्वविद्यालय का सुविचारित मत है कि अनुसंधान एवं विस्तार की आकांक्षा के बिना शिक्षा सृजनात्मक बन ही नहीं सकती। अनुसंधानकर्ता ही शिक्षा में नवजीवन का संचार कर ज्ञान की जिज्ञासा को चिरसंचित एवं संरक्षित करता है। अनुसंधानकर्ता व विस्तारक जब जनसामान्य को प्रशिक्षित करने की दिशा में कदम बढ़ाता है तो उसे सुगम व बोधगम्य उपमाओं, दृष्टांतों तथा उदाहरणों का सहारा लेना पड़ता है, जो न केवल ज्ञान को सर्वग्राही बनाता है अपितु अपने दृष्टिकोण को भी अधिक स्पष्ट कर लेता है।

अतः उपरोक्त प्रक्रियाओं का चतुष्टय समानुपातिक रूप में प्रस्तुत होने पर शिक्षा-पद्धति उत्कृष्ट रूप ग्रहण करती है।

i) नैतिक शिक्षा व्यवस्था :

चारों ओर के वातावरण के अनुसार मानव की जीवनदृष्टि दिशा ग्रहण करती है। अतः नई पीढ़ी के नैतिक विकास के लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध कराना विश्वविद्यालय का दायित्व है। निश्चित समय पर नियमित रूप से सामूहिक प्रार्थना अनुकूल वातावरण निर्माण का एक साधन है। नित्यप्रति सूर्योदय के समय सामूहिक प्रार्थना में विश्वविद्यालय के सभी छात्र-छात्राएं एवं प्राध्यापक-प्राध्यापिकाएं सम्मलित हुआ करेंगी। प्रार्थना में चित्तशुद्धि की क्षमता है। वह अहंकार का शमन एवं समर्पण की भावना जागृत करती है। व्यक्ति के अंतःकरण में संवेदनशीलता व व्यापकता को बढ़ाती है। ये ही नैतिक जीवन के आधारभूत तत्व हैं। विद्यार्थियों का नैतिक व्यक्तित्व केवल पढ़ाई-लिखाई से विकसित नहीं होता। विद्यार्थियों से अधिक आयु के लोगों व श्रेष्ठ पदों पर विराजमान महानुभावों की जीवनदृष्टि का, आकांक्षाओं का, अभिव्यक्ति का, खान-पान का तथा दैनंदिन जीवन के व्यवहार का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। इसी पर नैतिकता का विकास निर्भर करता है। अतः इस विश्वविद्यालय का दायित्व निभाने वाले प्रमुख व्यक्ति सतर्कता के साथ अपने व्यवहार से सुसंस्कारक्षम वातावरण का निर्माण करेंगे।

ii) जनस्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद :

आयुर्वेद केवल उपचार विधि तक सीमित नहीं है। वह मूलतः आजीवन रोगमुक्त रहने की कला का शास्त्र है। अतः नई पीढ़ी जीवन में किसी भी रोग से पीड़ित न हो, इसके लिए इस विश्वविद्यालय के अंतर्गत आयुर्वेद संकाय इस विशेष कार्य को संपन्न करेगा। विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र में (चित्रकूट के चारों ओर ५० किलोमीटर क्षेत्र में) जन्म लेने वाले बच्चों को आजीवन रोगमुक्त रखने का प्रयोग इस संकाय द्वारा प्रारंभ किया जा रहा है।

रोगग्रस्त लोगों के लिए आयुर्वेदिक उपचार पद्धति अधिक लाभदायक है। इसके दो प्रमुख कारण हैं :

(१) इसके लिए आवश्यक जड़ी-बूटियां साधारणतः गांव-गांव में तथा जंगलों में उपलब्ध होती हैं। जो अन्यत्र से मंगानी पड़ती हैं वे भी तुलनात्मक दृष्टि से बहुत सस्ती तथा स्थाई गुणकारी होने के कारण गरीबों व

अमीरों के लिए समान रूप से सुलभ हो सकती हैं।

(२) आयुर्वेदीय औषधियां रोग का केवल दमन नहीं, उन्मूलन करती हैं। इन औषधियों के प्रयोग से अन्य अनिष्ट परिणामों की संभावना नहीं होती।

आयुर्वेद संकाय में रोग निदान की दोहरी व्यवस्था होगी। नाड़ी परीक्षण आदि आयुर्वेदिक निदान-पद्धति के साथ-साथ रोग निदान के सभी प्रकार के आधुनिकतम उपकरणों का भी उपयोग किया जाएगा। इससे आयुर्वेदिक निदान पद्धति की निपुणता की जांच होती रहेगी तथा उसमें शोध कार्य द्वारा विकास की गति बढ़ेगी।

इस आयुर्वेद संकाय में शल्य क्रिया के आधुनिकतम उपकरण रखे जाएंगे तथा इसमें विशेष योग्यता प्राप्त शल्यक (सर्जन) भी कार्य करेंगे। आयुर्वेद में शल्य क्रिया की व्यवस्था थी, किंतु उसमें अनुसंधान व विकास कार्य सदियों से अवरुद्ध है। अतः शल्य चिकित्सा का जहां कहीं विकास हुआ है, उसे ग्रहण करना तथा उसके माध्यम से जनसेवा करना आज की आवश्यकता है। यह जानकर ही आयुर्वेद संकाय द्वारा उपर्युक्त व्यवस्था की जा रही है।

आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली में शुद्ध, प्रामाणिक एवं विश्वसनीय औषधियां मिलना कठिन है। अतः उत्तम कोटि की औषधियां उपलब्ध हो सकें, इस उद्देश्य से आयुर्वेद संकाय में एक वृहत रसशाला (फार्मेसी) का भी शुभारंभ किया गया है।

देश में बहुत बड़ी संख्या में ऐसी अधिकांश आबादियां हैं जहां प्रसूति-गृह व चिकित्सालयों का अभाव है। भविष्य में भी इसकी हर आबादी में संभावना दिखाई नहीं देती, किंतु इस अभाव की पूर्ति की प्रतीक्षा में ग्रामीण अंचल की आबादियों में शिशुओं के जन्म पाने की प्रक्रिया रुकने वाली नहीं है। यह कार्य अबाध गति से चलने वाला है। इस कार्य में अनंतकाल से परंपरागत रूप से दाइयां काम करती आ रही हैं। इस अनिवार्य कार्य के लिए भारत सरकार या प्रादेशिक सरकारों के स्वास्थ्य विभाग सब जगह पहुंच नहीं पा रहे हैं। परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष जहां जन्म लेने वाले शिशु जन्म के बाद कुछ ही दिनों में लाखों की संख्या में मृत्यु के शिकार हो रहे हैं, वहां जन्म देने वाली माताओं की मृत्यु संख्या भी लाखों में है।

अतः आयुर्वेद संकाय की प्राध्यापिकाएं छात्र-छात्राओं के साथ इन परंपरागत दाइयों के आवश्यक प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था करेंगी। उन्हें

स्वास्थ्यकर उपचार विधि के लिए आवश्यक उपकरणों की भी व्यवस्था की जाएगी।

विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र वाले गांवों में (चित्रकूट के चारों ओर ५० किलोमीटर के क्षेत्र में) इस संकाय द्वारा प्रशिक्षित स्वास्थ्य-कार्यकर्ताओं के माध्यम से "दादी मां का बटुआ" नामक प्रकल्प प्राथमिक चिकित्सा की दृष्टि से प्रचलित किया जाएगा।

iii) जड़ी-बूटी उद्यान :

चित्रकूट परिसर निसर्गदत्त वनों से संपन्न है। इन वनों में वनौषधि युक्त लताएं, झाड़ियां, कंदमूल एवं वृक्ष पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं, किंतु यह प्राकृतिक संपदा उपेक्षा का शिकार बनी हुई है। आयुर्वेद संकाय इन सब वनौषधियों का संवर्धन करेगा। जो औषधियां इन वनों में उपलब्ध नहीं हैं उनका रोपण किया जाएगा। यह संकाय वनौषधीय जड़ी-बूटियों का अपने परिसर में एक विशाल उद्यान निर्माण करेगा, जिसमें सभी प्रकार की औषधीय जड़ी बूटियां उपलब्ध हो सकेंगी। उनमें निरंतर अनुसंधान भी चलता रहेगा।

iv) योग विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रतिष्ठान :

संपूर्ण विश्व में यह मान्यता प्रचलित हो रही है कि शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा के समन्वित विकास के लिए योग विद्या में अद्वितीय क्षमता है। कांतिमय शरीर, उच्चतम चेतना, संतुलित स्वास्थ्य तथा सामाजिक व प्राकृतिक उन्नति के लिए आवश्यक आध्यात्मिक शक्ति का योगाभ्यास अनुभूत माध्यम है। अतएव ग्रामोदय विश्वविद्यालय के अंतर्गत योगविज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रतिष्ठान की स्थापना की जा रही है।

आयुर्वेद, योगविज्ञान एवं प्राकृतिक उपचार विधि का त्रिवेणी संगम मानव मात्र के जीवन के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है, किंतु इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर किसी का ध्यान आकर्षित नहीं हुआ है। चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय इस कार्य की महत्ता अनुभव कर उसे व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है।

v) वन संवर्धन :

इस धरती पर प्राणवायु पर निर्भर जीवधारियों की जीवन-यात्रा के लिए वनों का अस्तित्व अनिवार्य है। भूमि, वन, जल, वायु, आकाश एवं ऊष्मा संपूर्ण सृष्टि की धारणा के मूलभूत तत्व हैं। ये तत्व परस्परपूरक हैं। किसी एक की कमी जीवन का संतुलन बिगाड़ने का कारण बनती है। इस

प्राणदायी पहलू की अनभिज्ञता के कारण वनों का विनाश हो रहा है। विश्वविद्यालय अपने कार्यक्षेत्र में इस विनाश को रोकते हुए अपने विद्यार्थियों व अध्यापन में संलग्न महिला-पुरुषों द्वारा जनसहयोग से वन-संवर्धन एवं वन-विस्तार का कार्य संपन्न करेगा।

vi) गुरुकुल शैली :

(१) गुरुकुल संस्कार शैली की अवधारणा वर्तमान काल में भी न केवल प्रासंगिक है, अपितु मूल्य-आधारित शिक्षा के लिए अपरिहार्य है। गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर के चिंतन के अनुसार इस ग्रामोदय विश्वविद्यालय की मान्यता है कि विद्यालय एक ऐसा संसार है जहां मार्गदर्शन की शैली स्नेह और आत्मीयता में से प्रस्फुटित होती है। शिक्षा का अर्थ होता है विद्यार्थीगण अध्यापकों की आकांक्षाओं के साथ एकात्म होकर जीवन के पाठ पढ़ें। श्रेष्ठतम अध्ययन केंद्र वही है जहां लोग उच्चतम जीवनादर्श को व्यावहारिक जीवन में उतारने के लिए एकत्रित होते हैं। वहां वे मानवीय सुसंस्कारों के पुनीत वातावरण में विचरण करने का सुखानंद पाते हैं। वृद्ध, बच्चे और पढ़ाने तथा पढ़ने वाले समान रूप से साथ-साथ जीवनयापन करते हुए शाश्वत जीवन की प्रेरणा पाते हैं। इसी कारण इस विश्वविद्यालय ने गुरुकुल की पारिवारिक अवधारणा को समयानुकूल बना कर अपनाने का निश्चय किया है।

(२) सुशिक्षित व्यक्तियों को जिन गुणों से संपन्न होना चाहिए वे गुण हैं मानव मात्र के लिए निःस्वार्थ प्रेम, हृदय की शुद्धता, माता-पिता के प्रति आदर, सच्चाई के प्रति निष्ठा, अहिंसा, अपरिग्रह, स्वतंत्र-चिंतन, स्पष्ट अभिव्यक्ति, निर्भीकवृत्ति, संवेदनशीलता, न्यायनिष्ठा, महिलाओं के प्रति सम्मान, निसर्ग के साथ सामंजस्य, स्वावलंबन व स्वाभिमान। गुरुदेव रवींद्र के शब्दों में "संपूर्ण सृजन में अनन्त की चेतनानुभूति, निर्धन के प्रति आत्मीयता, उद्दंड शक्ति के सम्मुख न झुकने की क्षमता तथा पास-पड़ोस के निवासियों को समाज के प्रति जागृत रखने की दक्षता।" उपर्युक्त गुणों का संवर्धन प्रतिकूल वातावरण में संभव नहीं होता। अतः बुराइयों का प्रवाह रोकने के लिए पुरुषार्थ जगाना, जो प्रचलित वातावरण को बदलने का सामर्थ्य प्रदान कर सके, प्राथमिक कार्य है।

(३) भारत में प्राचीनकाल में बहु प्रजातियों एवं अनेकानेक संप्रदायों में अर्थात् मजहबों में अनोखी सांस्कृतिक एकता और एकात्मता विकसित हुई थी। भारत की सार्वभौम एकात्मता के अंतर्गत सैकड़ों उपसंस्कृतियों के

विकास को ऐसा सुअवसर उपलब्ध था जिससे देशवासियों के जीवन में सौंदर्यपूर्ण बहुरंगी एवं सर्वव्यापी संस्कृति विकसित हुई थी। उस गौरवपूर्ण इतिहास को वर्तमान काल में दुहराने के लिए भारत को पुनः अनेकता में एकता की नई ऊंचाइयों तक पहुंचना होगा।

(४) अपने देश के समान बहुजातियों, अनेकविध मजहबों, भाषाओं एवं बोलियों से संपन्न शायद ही कोई अन्य देश होगा। इतनी विविधताओं में यदि एकात्मता की शक्ति इन विभिन्नताओं को संभालने में अक्षम हुई तो राष्ट्र के अस्तित्व का संकट खड़ा हो सकता है। वर्तमान चुनौतियों का सफल सामना करने के लिए समुचित संश्लेषण कर युगानुकूल सभ्यता व संस्कृति को प्रासंगिक रूप प्रदान करना अनिवार्य है। यह विश्वविद्यालय इसी कार्य में संलग्न है।

(५) शिक्षा को युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना का माध्यम बनाकर ग्रामोदय विश्वविद्यालय सामाजिक पुनर्रचना का उत्प्रेरक बनने का आकांक्षी है। यह प्रेरणा इस विश्वास से जागृत हुई है कि भारत के पास समन्वयात्मक विरासत विद्यमान है। कुछ ही काल पूर्व गांधी जी तथा रवींद्रनाथ ठाकुर ने उसे पुष्ट किया था। अनंतकाल से प्रतिपादित भारत की जीवन दृष्टि में एकात्मता के आचरण की क्षमता, पुरातन वैज्ञानिक ग्रंथों में प्रतिपादित ऊर्जा की सूक्ष्मतम अणु से लेकर ब्रह्मांड तक व्याप्त क्रियाशीलता, गणितीय प्रतिभा तथा समयचक्र की अवधारणा को आधुनिक भौतिक एवं जैविक विज्ञान ने भी स्वीकार किया है। नवीनतम परिस्थितियों के निष्कर्ष हमें प्रेरित कर रहे हैं कि नूतन प्रकाश में उन्हें युगानुरूप प्रस्तुत करने का हम प्रयास करें। इस महान् कार्य में हम देश-विदेश की प्रतिभाओं का संभव सहयोग प्राप्त करेंगे।

(६) यह विश्वविद्यालय उस चेतना को सबके लिए सुलभ बनाना चाहता है जिसमें रासायनिक प्रक्रिया के अंतर्गत ऊर्जा व पदार्थ में निरंतर आदान-प्रदान होता रहता है। यह इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विनिमय न केवल जीव-जंतुओं में ही होता है, अपितु चेतन-अचेतन में भी होता रहता है। इससे नई पीढ़ी की चेतना में यह धारणा दृढ़मूल हो सकेगी कि 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा वस्तुस्थिति पर आधारित है। अपने कुटुंबियों, पड़ोसियों तथा निकट परिवेश से संबंध अधिक गहरा होना स्वाभाविक है। इन संबंधों को शनैः-शनैः अधिकाधिक व्यापक बनाना पारिवारिक इकाइयों एवं शिक्षा-केंद्रों का मिला-जुला दायित्व है। इसके बिना मानव का सबके लिए सहयोग एवं पूरक बनना संभव नहीं होगा।

(७) व्यवस्था

नई पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के लिए विश्वविद्यालय गुरुकुल की पारिवारिक व्यवस्था की महत्ता अनुभव करता है। आत्मीयतापूर्ण पारिवारिक वातावरण में संतान का चतुर्दिक् विकास संभव होता है, किंतु परिवार की अपनी सीमाएं हैं। उसी की पूर्ति के लिए गुरुकुल पद्धति विकसित हुई थी। वह मानव की असीम संभावनाओं को आत्मीयतापूर्ण वातावरण में मूर्त रूप प्रदान करने का सर्वोत्तम माध्यम है।

अतः वर्तमान संदर्भ में गुरुकुल पद्धति के लाभकारी तत्व अपनाकर नई पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के लिए उसका समयानुकूल रूप विकसित करना अति आवश्यक है। चित्रकूट स्वयं में छोटी-सी आबादी है। इस विश्वविद्यालय की विशेषताओं के कारण विद्याध्ययन के लिए अधिकांश शिक्षार्थियों का दूर-दूर से आना स्वाभाविक है। अतः यह विश्वविद्यालय प्रमुख रूप से आवासीय होगा। उसमें छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग गुरुकुल होंगे। प्रत्येक गुरुकुल में कम से कम दस या अधिक से अधिक चौदह छात्र या छात्राएं होंगी। इनके रहने के लिए दो कक्ष होंगे। दोनों कक्षों के मध्य में गुरुगृह होगा, जिसमें प्राध्यापक या प्राध्यापिका रहेंगी। वे ही इस गुरुकुल के मुखिया होंगे। सबका जलपान व भोजन एक साथ बनेगा, जिसे बनाने में सभी का सक्रिय सहयोग होगा।

हर एक गुरुकुल का अपना साग-सब्जी व फलों का छोटा-सा बगीचा होगा। यह कार्य भी सब मिलकर करेंगे। हर एक गुरुकुल में दूध देने वाली गायें होंगी। अतः गो-सेवा दैनंदिन जीवन का अंग बनेगी। फलस्वरूप हर एक बालक या बालिका व युवक या युवती विद्याध्ययन के साथ पारिवारिक जीवन के सुसंस्कार प्राप्त करती रहेंगी।

(८) व्यक्तित्व विकास में अखंडता

पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर स्नातकोत्तर और उससे भी उच्च शिक्षा का एक ही परिसर में प्रबंध इस विश्वविद्यालय की विशेषता है। परिणामस्वरूप शैशवावस्था से युवावस्था पूर्ण होने तक विद्यार्जन में संलग्न बालक-बालिकाओं व युवक-युवतियों का विकास अखंड रूप से समान वातावरण में संभव होगा। गुरुजनों के साथ इतने लंबे काल का सान्निध्य नई पीढ़ी के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इसके साथ ही अन्य विश्वविद्यालयों से विचारों के आदान-प्रदान हेतु सुसंवाद की भी व्यवस्था की जाएगी।

(९) अध्ययनशीलता

वर्तमान काल में मानवोचित साहित्य में रुचि घट रही है। यह विश्वविद्यालय सृजनात्मक साहित्य के अध्ययन की महत्ता को समझता है। साहित्य-सरिता में अवगाहन मानवीय संवेदना की अभिवृद्धि, निर्णयात्मक बुद्धि की क्षमता, दार्शनिक दृष्टिकोण की सूक्ष्मता तथा नैतिक जीवन की अभिरुचि बढ़ाने का माध्यम है। वस्तुतः इसमें इन सभी अपेक्षित गुणों व प्रतिभाओं को असीम सामर्थ्य प्रदान करने की क्षमता है। इसी से मानव अपने जीवन में शांति एवं संतुलन की स्थाई संपदा जुटा सकता है। विश्वविद्यालय के प्राध्यापक-प्राध्यापिकाएं छात्र-छात्राओं तथा परिवार परिसर के निवासियों में सृजनात्मक साहित्य पठन में रुचि बढ़ाने के कार्य में संलग्न रहेंगे।

(१०) छात्रों की भागीदारी के साथ विचार गोष्ठियों का आयोजन

इस विश्वविद्यालय के संकायों में विद्वान और आदर्शवादी प्राध्यापक कार्य कर रहे हैं। इनमें से कुछ अवकाशप्राप्त विशेषज्ञ भी हैं, जो अपनी आजीविका के लिए आर्थिक सहायता के अभिलाषी नहीं हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय नियमित रूप से देश-विदेश से उच्चकोटि के विद्वानों को बुलाकर विभिन्न विषयों पर विचार गोष्ठियां आयोजित करेगा। शिक्षकों या विद्यार्थियों के बीच पढ़ाए जाने वाले विषयों और जीवन के सभी पहलुओं पर विचार विनिमय करने के लिए ये गोष्ठियां विशेष लाभदायी सिद्ध होंगी। इस विश्वविद्यालय को सामान्य विश्वविद्यालय के अनुपात में कहीं अधिक संख्या में विचार गोष्ठियां, लेखों का पठन और विविध विषयों पर परिचर्चाओं का आयोजन करना होगा। विश्वविद्यालय का प्रयास होगा कि वह सभी विषयों में देश-विदेश के अद्यतन विचारों व विचारकों की विद्वत्ता एवं अनुभवों का लाभ उठाए।

११) ललितकला संकाय

कलात्मकता मानव प्राणी की विशेषता है। वह हर व्यक्ति में किसी न किसी रूप में जन्मतः विद्यमान रहती है। साथ ही कल्पनाशक्ति का उसे वरदान प्राप्त है। इन दो ईश्वर प्रदत्त गुणों का संगम मानव में कला प्रेम अंकुरित करता है। कलाकार अपनी कल्पना व कला के सहारे कठिनतम पाषाण को भी मनोहारी एवं उदात्तता प्रेरक रूप प्रदान कर पाता है। ललित

कलाओं में मानव को चराचर सृष्टि के साथ तादात्म्य अनुभव कराने की असीम क्षमता है।

ललित कलाएं सहज में ही सबके आकर्षण का केंद्र बनती हैं। इस माध्यम को अपनाए बिना महिला-पुरुषों में समाई हुई असीम संभावनाओं का युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना में योगदान पाना कठिन है। कला के माध्यम से उपलब्ध तन्मयता मानव की कार्यक्षमता बढ़ाती है, कृति में सौंदर्य उड़ेलती है तथा मानव की सृजनशीलता को गति प्रदान करती है।

कला मानव जीवन को पूर्णता प्रदान करती है। अतः हर बालक-बालिका के लिए उसकी रुचि के अनुसार ललितकला-साधना की सुविधा उपलब्ध कराना शिक्षा केंद्रों का दायित्व है। इसी उद्देश्य से इस विश्वविद्यालय में ललितकला संकाय प्रस्थापित किया गया है।

१२) व्यायाम एवं क्रीड़ा संकाय

बच्चों में खेलकूद की प्रवृत्ति जन्मजात होती है। दुर्भाग्य से इस प्रशंसनीय वृत्ति को प्रोत्साहन देने के स्थान पर उसकी उपेक्षा हो रही है। विद्यालयों को मान्यता देते समय अधिकारीगण भवनों की अनावश्यक शर्तें जरूर लगाते हैं, किंतु बच्चों के खेलकूद के लिए मैदान का प्रबंध है या नहीं यह जानने की भी चिंता नहीं करते। परिणामतः अधिकांश मान्यताप्राप्त विद्यालयों के पास खेलकूद के लिए मैदान उपलब्ध नहीं हैं। माता-पिता एवं गुरुजन भी इस संबंध में पूर्णतः उदासीन हैं। बच्चों को रात-दिन किताबों व कापियों के साथ जकड़कर रखना मात्र वे अपना दायित्व समझते हैं। फलस्वरूप नई पीढ़ी में खिलाड़ी वृत्ति (स्पोर्ट्समैन स्पिरिट) का अभाव हो गया है।

यह विश्वविद्यालय प्रचलित दृष्टिकोण में परिवर्तन करने के लिए प्रयासरत है। अतः सब प्रकार के खेलों व व्यायामों को अपने परिसर तथा कार्यक्षेत्र में प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इसी दृष्टि से इस विश्वविद्यालय में खेलकूद एवं व्यायाम संकाय प्रारंभ किया गया है। इस संकाय में आवश्यक सभी प्रकार के उपकरण उपलब्ध किए जा रहे हैं तथा योग्य प्रशिक्षकों की व्यवस्था की जा रही है। इस विश्वविद्यालय की आकांक्षा है कि विश्व खेलकूद एवं व्यायाम प्रतिस्पर्धाओं में भारत के खिलाड़ी एवं व्यायाम-निपुण युवक-युवतियां विश्व कीर्तिमान स्थापित करने में सफलता अर्जित करें।

१३) साहित्यिक विषयों से परिस्थितिकी एवं स्वस्थ पर्यावरण की व्यापक दृष्टि

संसार में सृजनात्मक साहित्य की लोकप्रियता घटती जा रही है। यह

विश्वविद्यालय इस मानसिकता में आवश्यक परिवर्तन करने की ओर विशेष ध्यान दे रहा है।

दार्शनिक दृष्टिकोण एवं नैतिक मूल्यों का प्रचलन करने में साहित्य का सर्वाधिक योगदान होता है। सृजनात्मकता के माध्यम से ही साहित्य निरंतर शांतिपूर्ण एवं आनंदपूर्ण जीवन निर्माण का माध्यम बनता है। विश्वविद्यालय की दृढ़ धारणा है कि यदि काव्यात्मक व साहित्यिक कल्पनाशक्ति का ह्रास होगा तो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के नए आविष्कार होने में भी बाधा पहुंचेगी। कारण कल्पनाशक्ति के बिना उनकी संभावना ही नहीं होती।

काव्य-शास्त्र के अनुसार साहित्य की परिभाषा निम्न पंक्तियों में वर्णित है - ''सहितस्य भाव इति सहित्यम्'' अर्थात जिसमें सभी को समाहित कर उनके कल्याण का भाव हो वही साहित्य है। तभी तो व्यक्ति और समाज से लेकर पेड़ के पत्ते तक की पीड़ा सर्वप्रथम साहित्यिक मन ही अनुभव करता है। स्वाभाविक ही है कि ऐसा ही मन पर्यावरण के प्रति सर्वाधिक संवेदनशील होता है।

विश्वविद्यालय का उद्देश्य ऐसे एकांगी व्यक्तित्व का निर्माण करना नहीं है जो केवल अपने विषय में अत्यधिक सचेत रहे तथा जीवन से जुड़े अन्य आयामों से बेखबर बना रहे। विश्वविद्यालय ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्वों का निर्माण करना चाहता है जो स्वयं की, परिस्थिति की, जैविक गतिविधियों की तथा पर्यावरण की समान रूप से चिंता करें। इसी दृष्टिकोण से इस विश्वविद्यालय में अनेक पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं।

१. जीवन का जैविक आधार, विशेषतः वनस्पति जीवन व उसका मानव जीवन से अविभाज्य संबंध
२. सामान्य ऋतुविज्ञान
३. भारतीय परिस्थितिकी
४. भारत का सांस्कृतिक आधार
   -भारतीय भूगोल तथा भारत में विभिन्न जातियों एवं उनकी गतिविधियों के समन्वय का इतिहास
   -भारत की प्राचीन राजनैतिक अवधारणाएं
   -प्राचीन भारत का सामाजिक दर्शन
   -भारत का सामाजिक व आर्थिक इतिहास
   -भारतीय दर्शन की मूल अवधारणाएं
   -स्वास्थ्य रक्षा व उपचार के परंपरागत प्रयोग
५. भारतीय व अन्य देशीय महापुरुषों की शिक्षाएं

६. पाश्चात्य राजनैतिक व आर्थिक अवधारणाएं तथा उनका इतिहास
७. विश्व की सभ्यता का इतिहास

विश्वविद्यालय का यह मत है कि उपरोक्त विषयों का ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। इसके बिना कोई भी व्यक्ति न तो सच्चे अर्थों में शिक्षित माना जा सकता है, न ही एक आदर्श नागरिक बन सकता है। यह विश्वविद्यालय ऐसे अध्यापकों को एकत्रित व आमंत्रित करेगा जो उपरोक्त विषयों को सुरूचिपूर्ण भाषा में, उपयुक्त दृष्टांतों व उपमाओं के साथ बोधगम्य बनाकर समझा सकें। वे न सिर्फ छात्रों में विषय को सुनने में रूचि जागृत करें, अपित छात्रों में प्रश्नोत्तर करने की तथा अपने विचार व्यक्त करने की प्रतिभा को प्रोत्साहित करें, जिससे छात्रगण इन विषयों के मर्म को भलीभांति जान पायें।

१४) ग्रामीण पुनर्रचना

ग्रामीण पुनर्रचना में न केवल कृषि और पशुपालन कार्य निहित है अपितु वन-संवर्धन, जल संसाधन प्रबंध, ग्रामीण स्वच्छता, कुटीर उद्योग, सड़कों व पुलों का निर्माण, लघु विद्युत स्त्रोतों का अनुसंधान, अनौपचारिक शिक्षा, अलाभकर जोतों को लाभकर जोतों में परिवर्तन करना, नैतिकता तथा सदाचार की दिशा में गतिशीलता बढ़ाना, स्वस्थ मनोरंजन एवं सामूहिक निर्णयों की पद्धति विकसित करना आदि कार्य ग्रामवासियों द्वारा करवाने की स्वप्रेरित विधियां विकसित की जाएंगी। विश्वविद्यालय अनुभव करता है कि प्रचलित सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक कार्यशैली समाज में विषमता व विघटन बढ़ा रही हैं। कुछ लोगों की समृद्धि व अधिकतर लोगों में भयानक गरीबी बढ़ रही है। वृद्धिंगत विषमता के साथ परस्पर दुर्भावना एवं कलह बढ़ रहा है। सर्वमान्य (जिन पर सबका भरोसा है) व्यक्तियों का सभी आबादियों में अभाव हो गया है। ग्रामवासी आपसी मुकदमेबाजी के कारण आर्थिक संकट और परस्पर कटुता के शिकार बन रहे हैं। यह समाज एवं देश के विघटन तथा पतन की दिशा है। इसमें परिवर्तन कर हर आबादी में सर्वमान्य व्यक्तियों का विकास तथा गांव में ही मिल बैठकर आपसी विवाद सुलझाने की विधि आविष्कृत की जाएगी।

१५) अध्ययन प्रणाली का परिसंस्कार

विश्वविद्यालय इस तथ्य से अवगत है कि आधुनिक विज्ञान का विशुद्ध वस्तुवादी दृष्टिकोण निर्जीव पदार्थों के अध्ययन में उपयोगी हो सकता है। परंतु इसी कारण प्रकृति तथा मानव समाज के प्रति परिपूर्ण दृष्टि का निरंतर ह्रास होता जा रहा है। इसी कारण प्रकृति के संसाधनों के साथ-साथ

मानवीय मूल्य भी इस 'आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी' की बलि चढ़ते जा रहे हैं। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार 'वर्तमान अर्थव्यवस्था व आर्थिक उन्नति के माध्यम के कारण ही प्राकृतिक संसाधनों का बेहिसाब शोषण हो रहा है।' अतः विश्वविद्यालय उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर विज्ञान एवं तकनीकी के अध्ययन में संतुलित दृष्टि को प्रतिष्ठित करेगा।

प्रकृति के नियमों के अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय प्रकृति के मूलभूत सिद्धांत, उन सिद्धांतों के अन्वेषण तथा उनसे जुड़े इतिहास की आवश्यक जानकारी के माध्यम से सिद्धांतों के उपयोग तथा उनके द्वारा समस्या निवारण के अनुप्रयोग करेगा। यदि इस माध्यम से कोई नवीन सिद्धांत परिलक्षित होता है तो उसके दार्शनिक पक्ष व अन्य प्रभावों का अध्ययन भी किया जाएगा।

जैविक विज्ञान के अध्ययन के साथ ही वनस्पतियों व वानिकी का अध्ययन भी किया जाएगा, जो चित्रकूट क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इसमें मुख्य रूप से वन्य जीवन के विभिन्न घटकों की अन्योन्याश्रयता का अध्ययन किया जाएगा। वनों में वनस्पतियों व जंतुओं की विभिन्न प्रजातियों तथा मानव में कैसा परस्पर संबंध है तथा मानव समाज के विभिन्न घटकों से इनकी क्या समरूपता है - यह प्रकाश में लाने का प्रयास किया जाएगा। प्रकृति के सजीव से निर्जीव तक के विभिन्न अवयवों के मध्य में इस अन्योन्याश्रयता को समझना सहज कार्य नहीं है, अपितु यह एक अनुसंधान का विषय है। विश्वविद्यालय इस कठिन कार्य को संपादित करने में अपनी सीमाओं को समझता है। अतः इस संबंध में विश्व के मूर्धन्य जीव विज्ञानियों तथा परिस्थितिकी विज्ञानियों का मार्गदर्शन प्राप्त करने का निरंतर प्रयास किया जाएगा।

विश्वविद्यालय आधुनिक विज्ञान के विशुद्ध वस्तुवादी दृष्टिकोण के घातक परिणामों को गंभीरता से अनुभव करता है। प्रत्यक्ष और मात्र प्रत्यक्ष को ही ज्ञान का आधार मानने से मानवीय अर्थात सामाजिक व नैतिक मूल्यों के ह्रास की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। अतः सामाजिक संदर्भ में इस विचारधारा की पुनर्रचना अत्यावश्यक है। तभी मानवीय व नैतिक मूल्यों का दीर्घकालिक, स्थायी तथा कल्याणकारी समाधान संभव है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य सामाजिक जीवन के नियमों का ऐसा संतोषजनक और विज्ञान सम्मत स्वरूप प्रस्तुत करना है जो एक सामंजस्यपूर्ण सहकारिता की भावना से युक्त चिरस्थाई समाज की स्थापना कर सके, जो वर्तमानकालीन उपभोगवादी, अर्थ-केंद्रित समाज से स्पष्टतः भिन्न होगा।

अर्थशास्त्र में प्रत्येक तथ्य को प्रकृति के नियमों, सिद्धांतों तथा प्राकृतिक अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना जरूरी है। इतिहास का विश्लेषण सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के कारणों पर आधारित हो तथा प्रत्येक युग में (भारत के संदर्भ में) इन सिद्धांतों के परिवर्तन का विशेष अध्ययन आवश्यक है। इतिहास में सर्वाधिक प्राथमिकता उन कारणों एवं प्रसंगों को देनी चाहिए जो भारतीय इतिहास के विभिन्न काल-खंडों में युग परिवर्तनकारी सिद्ध हुए हैं।

१६) अंतर्विश्वविद्यालयीन सहयोग

यह एक नवीन क्षेत्र है जिसमें यह विश्वविद्यालय अन्य विश्वविद्यालयों से सहयोग प्राप्त करने में कीर्तिमान स्थापित करना चाहता है। यह विश्वविद्यालय इस तथ्य से पूर्ण परिचित है कि वर्तमान अध्ययन प्रणाली को नवीन रूप में संस्कारित करने का कार्य वह अकेला नहीं कर सकता। अपितु उसे इस हेतु अन्य विश्वविद्यालयों का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना होगा। यह विश्वविद्यालय विभिन्न विश्वविद्यालयों व संस्थाओं में पारस्परिक सहयोग की प्रक्रिया में उत्प्रेरक का कार्य करने का प्रयास करेगा। समस्त विश्वविद्यालयों के सामूहिक प्रयास से ही वर्तमान काल की समस्याओं का समुचित समाधान प्रस्तुत करना संभव होगा। इसी प्रयास के द्वारा शिक्षापद्धति का अभिनव एवं सर्वहितकारी स्वरूप विकसित होगा।

इस प्रयोग के प्रवर्तक के रूप में कार्य करते हुए हम विनम्रतापूर्वक अपनी कमियों को स्वीकार करते हैं। अपने विभिन्न विभागों में से चुने हुए छात्रों को अन्य विश्वविद्यालयों के अनुसंधान व सहयोग हेतु भेजा जाएगा, जिन विषयों में विश्वविद्यालय अपने को अन्य विश्वविद्यालयों के समकक्ष अनुभवी नहीं समझता। अन्य विश्वविद्यालयों के परिपक्व अनुभव से विशिष्ट क्षेत्रों में निरंतर मार्गदर्शन व सहयोग की यह विश्वविद्यालय अपेक्षा रखता है। सौभाग्यवश इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निकटवर्ती क्षेत्रों में अनेक विश्वविद्यालय विद्यमान हैं, जो चित्रकूट से बहुत दूर नहीं हैं। जैसे - इलाहाबाद, लखनऊ, भोपाल, झांसी, उज्जैन, इंदौर, जबलपुर, आगरा, सागर, ग्वालियर तथा रीवा। यह विश्वविद्यालय देश अथवा विदेश के किसी भी संस्थान व विश्वविद्यालय से सहयोग प्राप्त करने के लिए बेहिचक संपर्क स्थापित करेगा। आशा है कि हमें उनसे अपेक्षित सहयोग प्राप्त होगा।

१७) परीक्षा पद्धति में संशोधन

विश्वविद्यालय इस बात से सहमत है कि साल में एक बार परीक्षा लेने की प्रणाली वास्तविक रूप में ज्ञान प्राप्ति के लिए उपयुक्त सिद्ध नहीं हुई है।

इसमें अनेक कमियां प्रगट हुई हैं। यथा -

(१) वर्ष भर अध्ययन कार्य उपेक्षित रहता है।

(२) परीक्षा से पूर्व कुछ विशेष पाठ्यांशों को ही रटना तथा परीक्षा होते ही उन्हें भी भूल जाना सामान्य प्रक्रिया बन गई है। अतः विश्वविद्यालय मूल्यांकन की एक ऐसी पद्धति अपनाने जा रहा है जिसमें शिक्षार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन लगातार चलता रहेगा। इस हेतु छात्र-छात्राओं के ज्ञान प्राप्ति का मूल्यांकन तीन प्रकार की प्रक्रियाओं द्वारा किया जाएगा।

(i) दैनंदिन कक्षाओं में छात्रों के प्रदर्शन, उनके साथ हुए प्रश्नोत्तर, आचार और व्यवहार के आधार पर उनकी बुद्धिमत्ता, कल्पनाशक्ति तथा कर्तृत्व का मूल्यांकन एवं उनकी सामूहिक व समन्वयवादी प्रवृत्ति का अवलोकन करना सम्मिलित होगा। छात्रों क़ा यह मूल्यांकन निरंतर होता रहेगा।

(ii) प्रचलित परीक्षा की पद्धति के अनुसार छात्रों द्वारा अध्ययन किए जाने वाले विषयों में लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता की जांच छमाही एवं वार्षिक परीक्षाओं के माध्यम से की जाएगी। इस प्रक्रिया में यह ध्यान रखा जाएगा कि प्रश्नपत्र का निर्माण इस प्रकार से हो कि उससे छात्र की विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति, तार्किक क्षमता, वैचारिक निपुणता, कल्पनाशक्ति, उसके अनुप्रयोग तथा अन्य मानसिक क्षमताओं का मूल्यांकन संभव हो सके।

(iii) अधिकांश विश्वविद्यालयों में डॉक्टरेट की उपाधि से पूर्व ही एक गहन मौखिक परीक्षा होती है। परंतु यह विश्वविद्यालय स्नातक एवं स्नातकोत्तर एवं उपाधि से पूर्व की परीक्षाओं में भी एक मौखिक परीक्षा आयोजित करेगा। फलस्वरूप छात्रों की अभिव्यक्ति का मूल्यांकन संभव होगा।

ख) अनुसंधान

ग्रामोदय विश्वविद्यालय अनुसंधान को शैक्षणिक कार्य का अभिन्न अंग मानता है। सभी संकायों के वैज्ञानिक अध्यापन में संलग्न महिला-पुरुष एवं स्नातकोत्तर छात्र-छात्राएं अनुसंधान कार्य में सहभागी होंगे। अनुसंधान के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध की जाएंगी। विश्वविद्यालय ने इस कार्य के लिए अपने चारों ओर के पचास किलोमीटर की परिधि को अपनी प्रयोगशाला माना है।

अनुसंधान कार्यों में सभी आवश्यक विषय सम्मिलित हैं, तथापि ऐसे विषयों को प्राथमिकता दी जा रही है जो अभी तक उपेक्षित रहे हैं। उदाहरणार्थ - ग्रामवासियों के जीवन तथा उनके रहन-सहन से संबंधित सामाजिक विज्ञान आदि ग्राम जीवन से जुड़े विविध पहलुओं का अध्ययन तथा वर्तमान काल के अनुसार आवश्यक पुनर्रचना की विधियों के आविष्कार के लिए व्यापक स्तर पर प्रयोग किए जाएंगे। इसमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर विशेष बल दिया जाएगा। इस कार्य में वैज्ञानिकों, अध्यापकों व छात्रों के साथ-साथ प्रसार कार्य में संलग्न महिला, पुरुषों एवं किसानों तथा कुटीर ग्रामीण उद्योगों में संलग्न विभिन्न लोगों को सहभागी बनाया जाएगा।

इसके अतिरिक्त व्यापक स्तर पर प्रयोगों के लिए विश्वविद्यालय के अंतर्गत निम्नलिखित संस्थान एवं केंद्र स्थापित किए जाएंगे। उन्हें शोध के लिए अन्य संस्थानों से सहयोग लेने की अनुमति प्रदान की जाएगी।

- पर्यावरण विज्ञान संस्थान
- ग्रामीण पुनर्रचना संस्थान
- ऊर्जा अध्ययन केंद्र
- लोक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान
- महिला एवं बाल-विकास तथा परिवार कल्याण केंद्र
- विकलांग कल्याण केंद्र
- जनसंचार केंद्र

प्रत्येक संस्थान एवं केंद्र अपने विषय में सघन शोध कार्य करेगा, जिसमें न केवल विश्वविद्यालय संकायों के सदस्य और शोध विद्यार्थी भाग लेंगे बल्कि अन्य अध्ययन और शोध केंद्रों के ख्यातिप्राप्त शोधकर्ता तथा विकासोन्मुख ग्रामवासी भी सहभागी होंगे।

ग) प्रसार कार्य

यह अनुभव सिद्ध है कि हर एक विषय का सूक्ष्मतम ज्ञान तथा गहनतम अध्ययन क्रियात्मक शिक्षण विधि के माध्यम से ही संभव होता है। शिक्षा क्षेत्र में इस आवश्यक विधि का अभाव है। परिणामस्वरूप विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की संख्या में निरंतर वृद्धि होने पर भी जनसाधारण के जीवन स्तर में उन्नति संभव नहीं हो रही है, अपितु शिक्षित वर्ग अधिकाधिक परजीवी बनता जा रहा है। बड़ी संख्या में इकॉलॉजी व पर्यावरण विभाग खुल रहे हैं, किंतु न तो शहरों और न ही ग्रामों के प्रदूषण में कमी आ रही है या पर्यावरण में सुधार हो रहा है। इन कार्यों पर जो

विशाल धनराशि व्यय हो रही है, वह अनुत्पादक सिद्ध हो रही है।

यह विश्वविद्यालय प्रचलित शिक्षा पद्धति की इस अनुत्पादक विधि में परिवर्तन करेगा। विद्यार्थी एवं प्राध्यापक वर्ग मिलकर ग्रामीण पुनर्रचना के प्रयोगों द्वारा शिक्षा एवं उत्पादन को एक दूसरे से जोड़कर एकात्म तथा आत्मनिर्भर शिक्षा-पद्धति का विकास करेंगे। इसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण का प्रबंध किया जाएगा।

i) लोक शिक्षा :

विश्वविद्यालय का विश्वास है कि बिना लोक शिक्षण के समाज के सभी घटकों की प्रगति में आम नागरिकों का सक्रिय सहयोग संभव नहीं है। ग्रामीण पुनर्रचना का यह कार्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अतएव विश्वविद्यालय प्रौढ़ और अनौपचारिक शिक्षा को विशेष महत्व देता है। लोक शिक्षा का कार्य केवल लिखना, पढ़ना और गणित सिखाने तक सीमित नहीं होगा। सामान्य ज्ञान के साथ-साथ समस्याओं के निराकरण में लोगों को सक्रिय बनाया जाएगा। इसी से सर्वसाधारण लोगों में स्वावलंबन की चेतना जागृत होगी। विश्वविद्यालय परिसर के ५० किलोमीटर के घेरे में बसी हुई आबादियों में इस दिशा में कार्य संपन्न किया जाएगा।

ii) लोक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन :

यह अनुभव सिद्ध है कि खाद, फसलचक्र, सिंचाई द्वारा उपजाऊ शक्ति में वृद्धि, रोग निरोधक पद्धतियां आदि के हमारे परंपरागत अनुभवों के आधार पर आविष्कार हुए थे। वे आधुनिक पद्धतियों से कहीं अधिक लाभप्रद और स्थाई सिद्ध हो रहे हैं। कारण वे प्रकृति से सुसंगत, सस्ते और सामान्य जनजीवन से जुड़े हुए हैं। इन पद्धतियों का आधुनिक लाभकर आविष्कारों के साथ मेल बिठाकर उनकी पुनर्स्थापना की आवश्यकता है। रासायनिक खादों के उपयोग से, कीटनाशकों के फैलाव से एवं बड़े-बड़े बांधों से भयानक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। विश्वविद्यालय लोक-विज्ञान और तकनीकी के पुनरुत्थान तथा उसकी उन्नति का प्रयास करेगा। इस दिशा में पिछले कुछ वर्षों में दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों में सामान्य लोगों द्वारा कठिन समस्याओं के सस्ते समाधान ढूंढ़ निकालने की सर्जनात्मक क्षमता के सुखद परिणाम देखने को मिले हैं।

आधुनिकता के आवरण में प्रगति के नाम पर अपनाई गई तकनीकी प्रक्रिया में स्थानीय प्रतिभाएं अप्रासंगिक हो गई हैं, क्षेत्रीय असंतुलन बढ़ रहा है, विषमता विकराल रूप धारण कर रही है, परावलंबन अनिवार्य सा हो गया है, बेकारी बेकाबू हो रही है एवं निराशा सर्वव्यापी बनी है। यह

विश्वविद्यालय इन दुष्परिणामजनक प्रक्रियाओं में आवश्यक परिवर्तन कर समाज के सभी घटकों में आशा और विश्वास की पुनर्स्थापना करेगा।

१. विकास के लिए क्षेत्रीय इकाई को आधार बनाया जाएगा।

२. क्षेत्र विशेष में कृषिजन्य, वनजन्य, भूगर्भजन्य तथा पशुजन्य उपलब्ध कच्चे माल का सर्वेक्षण किया जाएगा।

३. चुने हुए क्षेत्र में परंपरागत रीति से जिन कच्चे मालों का उत्पादन हो रहा हो और अन्य प्रकार के कच्चे माल के उत्पादन की संभावना हो सकती हो, उनका उत्पादन बढ़ाने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाएगा। कच्चे माल का अधिकतम एवं अनेक प्रकार का उत्पादन ही आर्थिक समृद्धि का सबल आधार हुआ करता है।

४. विभिन्न प्रकार के उपलब्ध कच्चे माल को उत्तम प्रकार के तैयार माल के रूप में रूपांतरित करने की तकनीकी स्थानीय और क्षेत्रीय आधार पर विकसित की जाएगी।

५. इसी दृष्टि से क्षेत्रीय युवक-युवतियों को समुचित प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाएगी जिससे क्षेत्रीय प्रतिभाओं का विकास संभव हो।

६. उत्पादित तैयार माल द्वारा क्षेत्रीय आबादी की आवश्यकताओं की पूर्ति को प्राथमिकता दी जाएगी। शेष तैयार माल निर्यात किया जाएगा। इसके लिए विपणन के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था की जाएगी।

७. इस उत्पादन के अतिरिक्त क्षेत्रीय आबादी की आवश्यकता-पूर्ति के लिए कौन-कौन सी वस्तुओं का कितनी-कितनी मात्रा में आयात करना आवश्यक है, इसका सर्वेक्षण किया जाएगा।

८. इन आयातित वस्तुओं में से कौन-कौन सी वस्तुएं, कच्चा माल बाहर से मंगाकर, श्रेष्ठ स्तर की तथा आयातित माल की प्रतिस्पर्धा में टिक सकने वाली वस्तुएं स्थानीय एवं क्षेत्रीय आधार पर उत्पादित की जा सकती हैं, इसकी जांच कर उनका उत्पादन स्थानीय आधार पर करने की व्यवस्था की जाएगी। उसके लिए क्षेत्रीय युवक-युवतियों के आवश्यक प्रशिक्षण की व्यवस्था होगी।

९. जिन आयातित वस्तुओं का क्षेत्रीय आधार पर लाभकारी उत्पादन करना संभव नहीं है, उनके लिए साल भर में कितनी धनराशि क्षेत्र से बाहर जा रही है, इसका सर्वेक्षण किया जाएगा।

१०. कम से कम उतनी धनराशि बाहर से अर्जित करने के लिए उपयोगी वस्तुओं का क्षेत्रीय आधार पर अधिक मात्रा में उत्पादन तथा निर्यात करने का प्रबंध किया जाएगा। उत्पादित वस्तुओं की गुणवत्ता का

विशेष ध्यान रखा जाएगा, जिससे विपणन में सुविधा तथा क्षेत्र के कारीगरों की चारों ओर कीर्ति बढ़ सके।

११. इससे क्षेत्र का आर्थिक संतुलन बढ़ेगा। इस गतिविधि के फलस्वरूप क्षेत्रीय प्रतिभाएं विकसित होंगी, सबके लिए रोजगार उपलब्ध होंगे, क्षेत्रीय असंतुलन का निराकरण होगा, आर्थिक समृद्धि भी बढ़ेगी एवं स्वावलंबन का जीवन हर आबादी में खड़ा होगा। ग्रामीण युवक-युवतियों को रोजी-रोटी के लिए अपना गांव छोड़कर अन्यत्र जाने की जरूरत न पड़ेगी। गांव संपन्नता के केंद्र बनेंगे। गांधीजी के ग्राम स्वावलंबन का यही रूप था।

iii अ) महिला-मां :

मानव समाज के अस्तित्व का आधार है महिला व पुरुष की परस्परपूरकता। वह तभी सार्थक सिद्ध हो सकती है जब दोनों का मानसिक एवं बौद्धिक स्तर समान हो। दुर्भाग्य से सामाजिक जीवन के इस महत्वपूर्ण पहलू की सदियों से उपेक्षा हो रही है। साधारणतः सब की प्रबल आकांक्षा रहती है कि अपना समाज उन्नत हो तथा देश समृद्ध हो, किंतु यह कार्य नूतन संतान के सुविचारित विकास पर निर्भर करता है। नूतन संतान के व्यक्तित्व की प्रथम शिल्पी है माता अर्थात् महिला। मां उसे अपने गर्भ में नौ माह धारण किए रहती है। गर्भ-काल में जन्म लेने वाली संतान पर संस्कार होते हैं मां की मानसिकता के, उसकी आंतरिक भावनाओं के, उसकी कल्पना-शक्ति के, उसकी जीवनदृष्टि के, उसकी आकांक्षाओं के तथा उसकी वैचारिक क्षमता के। अमेरिका के उत्तर कोरोलिना विश्वविद्यालय ने गर्भवती महिलाओं पर प्रयोग कर पाया है कि गर्भस्थ शिशु पर मां की तत्कालीन मानसिकता का प्रभाव होता है। गर्भकाल के अंतिम पांच माह में शिशु की श्रवणशक्ति काम करना प्रारंभ कर देती है। जन्म पाने पर भी बच्चा अपनी मां के ही साथ कम से कम साल-डेढ़ साल तक अभिन्न रूप से जुड़ा रहता है और सतत मंडराता रहता है मां के चारों ओर तीन-चार साल तक।

इन प्राथमिक चार सालों में बच्चे की श्रवणशक्ति व दृष्टि बहुत पैनी होती है। साधारणतः मां व बड़े-बूढ़े समझते हैं कि इस काल में बच्चा कुछ नहीं समझता। अतः उसकी उपस्थिति में चाहे जैसा आचरण व चाहे जैसी चर्चा की जाती है। पुरातन एवं आधुनिकतम मानस-शास्त्री समान निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि बच्चे के मस्तिष्क का कंप्यूटर अस्सी प्रतिशत जानकारी

संग्रहीत कर लेता है जीवन के प्रथम चार वर्षों में। इसी काल में बच्चा अपनी मां के सान्निध्य में सर्वाधिक रहता है। अतः जब समाज की उन्नति एवं देश का भविष्य नूतन संतान पर निर्भर है तो महिलाओं की मानसिकता, बौद्धिक योग्यता तथा जीवनदृष्टि व्यापक और संस्कारक्षम होना नितांत आवश्यक है। उसी पर सर्वथा निर्भर करती है नूतन संतान की योग्यता और क्षमता तथा समाज की उन्नति और देश का भविष्य।

उपर्युक्त वस्तुस्थिति को यह विश्वविद्यालय आवश्यक महत्व देकर महिलाओं के समुचित विकास पर विशेष ध्यान देगा।

ब) बालक-बालिकाएं--भवितव्य के संकेत :

पटरियों पर, रेलवे स्टेशनों पर, बस-अड्डों पर तथा ग्रामीण अंचलों में बच्चे जिन अवस्थाओं में अपनी जिंदगी काट रहे हैं, उसी से स्पष्ट होता है कि समाज का नेतृत्व अपने दायित्व के प्रति कितना उदासीन है।

क्या देश के सुशिक्षित, बुद्धिजीवी एवं वैभवशाली लोगों की या शासक और प्रशासकों की दृष्टि में इस नूतन संतान की यह दयनीय दशा नहीं आती? यह नूतन संतान जवान बनकर क्या करती है और उसके कौन से दुष्परिणाम समाज को भोगने पड़ते हैं यह सर्वविदित है।

ये अर्द्धनग्न व अधिकांश नग्न बच्चे सुशिक्षितों की, धनिकों की, शासकों की व प्रशासकों की संतान के दृष्टिपथ में आए बिना नहीं रहते, किंतु इनके अभिभावकों की संवेदनशून्यता सुखानंद में जीने वाले इन बच्चों में प्रतिबिंबित होती है। उनके हृदय में अपने समवयस्क इन बालक-बालिकाओं के प्रति न तो संवेदना अनुभव होती है, न सहानुभूति का भाव जग पाता है। देश के भविष्य की दृष्टि से यह स्थिति बहुत चिंताजनक है।

अपने समाज में जन्म पाने वाली नूतन संतान की ये दो शाखाएं हैं। भावनात्मक दृष्टि से वे एक दूसरे से दूर-अति दूर हैं। देश की एकता व एकात्मता की दृष्टि से इसका परिणाम बहुत घातक होता जा रहा है। यदि शिक्षा के केंद्र भी इस भयानक विषमतापूर्ण विघटन को दूर करने की दिशा में कदम नहीं बढ़ाएंगे तो शिक्षा देशोन्नति का माध्यम कभी न बनेगी।

नई पीढ़ी की इन दो शाखाओं में निकटता बढ़ाना, उनमें परस्पर के प्रति लगाव उत्पन्न करना, परस्पर सहयोग की विधियां विकसित करना एवं सामंजस्य के द्वारा भवितव्य के सुखद संकेत प्रकट करना प्रत्येक शिक्षा-केंद्र का दायित्व है। यह विश्वविद्यालय इस कार्य में पहल करने जा रहा है।

चित्रकूट के चारों ओर फैले ग्रामीण अंचल की आबादियों में यह विश्वविद्यालय अपने प्राध्यापकवर्ग एवं छात्र-छात्राओं के द्वारा विभिन्न स्तरों के परिवारों तथा उनमें पलने वाली संतानों में परस्परपूरकता के द्वारा सहयोगात्मक सामाजिक चेतना निर्माण करने के कार्य का शुभारंभ कर रहा है।

क) प्रशिक्षण

शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार के साथ-साथ प्रशिक्षण-कार्य बहुत आवश्यक है। प्रशिक्षण के बिना शिक्षा, अनुसंधान तथा प्रसार कार्य निष्फल सिद्ध होगा। अभी तक प्रशिक्षण केवल तदर्थ रूप में ही अपनाया गया है, क्योंकि समाज का निम्न तबका, खासकर ग्रामीण समुदाय, औपचारिक शिक्षाप्राप्ति में पिछड़ा हुआ है। इसलिए उनके प्रशिक्षण का कार्य अधिक महत्व रखता है। जन-कल्याण के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रसार छोटे-बड़े प्रशिक्षण कार्यक्रमों के रूप में आयोजित करना अत्यावश्यक है। इसे विश्वविद्यालय के परिसर में या परिसर के बाहर भी आयोजित किया जाएगा। प्रसार कार्य को परिणामजनक बनाने हेतु प्रशिक्षण द्वारा सामान्य लोगों के लिए ज्ञान एवं कुशलता प्रदान करने के कार्यक्रम आवश्यकतानुसार आयोजित किए जाएंगे।

प्रशिक्षण की महत्ता केवल गांव एवं प्रसार से ही संबंध नहीं रखती, अपितु कार्यरत व्यक्तियों अर्थात् शिक्षक एवं वैज्ञानिकों के लिए भी समान रूप से महत्व की है। अतः ग्रामोदय विश्वविद्यालय में सभी प्रकार के प्रशिक्षणों के लिए एक प्रशिक्षण निदेशालय की स्थापना की जा रही है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यावहारिक एवं उपयोगी हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाएगा। अधिकांश ग्रामवासी अनपढ़ हैं, इसलिए प्रशिक्षक प्रत्यक्षीकरण द्वारा प्रशिक्षार्थियों को ज्ञान एवं कुशलता प्रदान करेंगे। प्रशिक्षण के साथ-साथ अनिवार्य संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे। इसके उपरांत प्रशिक्षार्थियों को अपना स्वयं का धंधा प्रारंभ करने के लिए आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराने वाली संस्थाओं से जोड़ने का कार्य भी संपन्न किया जाएगा।

ख) शिक्षा-अनुसंधान-प्रसार एवं प्रशिक्षण : समन्वय

आधुनिक शैक्षणिक वातावरण में शिक्षा, अनुसंधान, प्रसार एवं प्रशिक्षण के बीच ताल-मेल अति आवश्यक है। विश्वविद्यालयों में इस तरह की प्रणाली नाम मात्र की है। कृषि विश्वविद्यालयों में भी शिक्षा, अनुसंधान,

प्रसार एवं प्रशिक्षण में समन्वय औपचारिकता के रूप में ही है। अतः ग्रामोदय विश्वविद्यालय ने इन चारों घटकों पर समान बल देने के साथ इनमें समन्वय की व्यवस्था की है।

ग्रामवासियों एवं वैज्ञानिकों के बीच तालमेल एवं परस्पर विचार विनिमय के कारण गांवों का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक उत्थान का कार्य गति प्राप्त करने लगा है। अन्य विश्वविद्यालयों में अपने परिसर के अंदर ही सीमित रहने की परंपरा प्रचलित है। इसके कारण विद्यार्थीगण व्यावहारिक ज्ञान से एवं अनुभवों से वंचित रहते हैं। इन्हीं कमियों को दूर करने के लिए इस विश्वविद्यालय ने अपने परिवार-परिसर को व्यापक बनाया है।

अंतर-विश्वविद्यालय सहयोग की दिशा में यह विश्वविद्यालय पहल करेगा। इस विश्वविद्यालय की शिक्षा-व्यवस्था के सुधार के प्रयासों में अन्य विश्वविद्यालयों और संस्थानों के सहयोग की आवश्यकता है। जीवन की समस्याओं और अन्य विषयों को लेकर शिक्षा को नया मोड़ देने में अनेक प्रश्न उठेंगे। उनके समाधान के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ सुसंवाद की प्रक्रिया प्रारंभ करना व उसे निरंतर चालू रखने का कार्य प्रारंभ किया जा रहा है।

यह विश्वविद्यालय एक अनोखी संस्था होगी, जिसकी महत्ता देश एवं विदेशों में अनुभव की जाएगी। यह विश्वविद्यालय विश्व के प्रमुख अनुसंधान एवं विकास-संस्थाओं से सतत संपर्क रखेगा। हम उनके द्वारा विकसित अधुनातन ज्ञान एवं अनुभवों का लाभ उठाएंगे।

६. ग्रंथालय :

ग्रंथालय मानव विकास का आधार एवं विश्वविद्यालय का प्राण है। यह विश्वविद्यालय समस्त विषयों से युक्त विशाल संदर्भ ग्रंथालय का निर्माण कर रहा है।

पुरातन साहित्य के अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ पाना कठिन हो गया है। गत शताब्दियों में महान् विद्वानों ने जिन मौलिक ग्रंथों का प्रणयन किया था और इस शताब्दी में भी जो विशेष ग्रंथ प्रकाशित हुए थे, उनमें से अनेक मौलिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं। यह विश्वविद्यालय उन सभी महानुभावों से विनम्र अनुरोध करता है कि वे अपने व्यक्तिगत पुस्तकालयों में से ऐसे ग्रंथ नई पीढ़ी के विकास के लिए इस विश्वविद्यालय को अर्पित करने की कृपा करें।

संदर्भ ग्रंथों एवं माइक्रोफिल्म के साथ-साथ इस विश्वविद्यालय का

ग्रंथालय विविध विषयों से संबंधित बोधपूर्ण पोस्टर्स, चार्ट्स, फिल्म्स, छायाचित्र आदि का भी संग्रह करेगा।

७. प्रशासनिक प्रबंध :

संकाय का संचालन एक संकायाध्यक्ष (डीन) द्वारा किया जाएगा और उसमें विषयवार विभाग होंगे। प्रत्येक विभाग के लिए एक पाठ्य-परिषद (बोर्ड आफ स्टडीज) होगी, जो आवश्यकता के अनुसार विभाग की समस्याओं को संकाय के माध्यम से विद्या-परिषद् (एकैडमिक कौन्सिल) को निर्णय के लिए भेजेगी।

संकाय, संस्थान व केंद्रों की सूची सांकेतिक है। आवश्यकताओं के अनुसार विद्या-परिषद् (एकैडमिक कौन्सिल) की स्वीकृति से इसमें आवश्यक परिवर्तन तथा परिवर्धन संभव है।

८. उपसंहार :

जीवन के प्रत्येक पहलू को विचार में लेकर इस सनातन राष्ट्र के मनीषियों ने परस्पर विचार-विनिमय के माध्यम से अनेक शतकों के प्रयासों द्वारा काल की कसौटी पर परखकर लोक-विज्ञान का विकास किया था। कृषिविज्ञान, वास्तुशिल्प, आवागमन के साधन, खगोलशास्त्र, ऋतु निदान आदि उसी के सुपरिणाम हैं।

कला व कल्पना के क्षेत्र में भी कम उपलब्धियां नहीं हुई थीं। लोक-संगीत, लोक-नृत्य, लोक-चित्रकला, लोक-स्वास्थ्य, मूर्ति-कला, हस्तशिल्प आदि में आश्चर्यजनक निपुणता के लिए भारत जगप्रसिद्ध रहा है। लोक-चिकित्सा परंपरा की अनूठी देन आज भी अति महत्व का विषय है। यह हमारी अनमोल धरोहर है।

मानव विकासशील प्राणी है। गतिमानता उसका स्वभाव है। प्रगति निरंतर प्रगति उसकी प्रेरणा है। विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र में अखंड रूप से हो रहे आविष्कार उसकी इस प्रवृत्ति के परिचायक हैं। परिणामस्वरूप व्यक्तिगत, पारिवारिक, क्षेत्रीय तथा सामाजिक जीवन-रचना में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। तदनुसार युगानुकूल सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक पुनर्रचना करना प्रत्येक युग का धर्म है। उसकी उपेक्षा राष्ट्र-जीवन में जटिल समस्याओं का कारण बनी हुई है। अतः लोक-विज्ञान व लोक-साहित्य का गहन अध्ययन, अध्यापन तथा उसका आधुनिक-काल के आविष्कारजन्य विज्ञान व तकनीकी प्रगति के साथ सामंजस्य प्रस्थापित करते हुए मानवीय जीवन-मूल्यों को कायम रखना वर्तमान-काल की महती आवश्यकता है। इसी से राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय

जीवन सुव्यवस्थित, शांतिमय, विषमतारहित, समृद्धिशाली व उन्नतशील बन सकता है। यह विश्वविद्यालय इसी दिशा में गतिशील है।

चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में कार्यरत संकाय एवं उनके विभाग

क्र.	संकाय का नाम	विभाग का नाम
१.	भाषा संकाय	१. हिंदी विभाग
		२. संस्कृत विभाग
		३. अंग्रेजी विभाग
		४. पत्रकारिता विभाग
२.	समाज विज्ञान संकाय	१. इतिहास विभाग
		२. भूगोल विभाग
		३. दर्शन शास्त्र विभाग
		४. समाज शास्त्र विभाग
		५. राजनीति शास्त्र विभाग
		६. अर्थशास्त्र विभाग
		७. व्यवहार शास्त्र विभाग
३.	शिक्षा संकाय	१. अध्यापन प्रशिक्षण विभाग
		२. ग्रंथालय प्रशिक्षण विभाग
		३. सूचना प्रशिक्षण विभाग
		४. विशेष शिक्षा (नेत्रहीन, विकलांग) विभाग
		५. दृष्य-श्रव्य विभाग
		६. पाठ्यक्रम विकास केंद्र
४.	विज्ञान संकाय	१. भौतिकी विज्ञान विभाग
		२. रसायन विज्ञान विभाग
		३. वनस्पति विज्ञान विभाग
		४. जैव विज्ञान विभाग
		५. भूविज्ञान विभाग

६. गणित शास्त्र विभाग
७. सांख्यिकी शास्त्र विभाग
८. जीव-विज्ञान

५. वाणिज्य संकाय
१. लेखा
२. कार्यालय - प्रबंधन
३. व्यापार - प्रबंधन
४. संसाधन - प्रबंधन

६. ग्रामीण पुनर्रचना संकाय
१. ग्राम रचना एवं गृह निर्माण विभाग
२. सामाजिक पुनर्रचना विभाग
३. आर्थिक पुनर्रचना विभाग
४. राजनीतिक पुनर्रचना विभाग
५. सांस्कृतिक पुनर्रचना विभाग
६. सामूहिक कार्यक्रम विभाग
७. यातायात विभाग
८. लोक स्वास्थ्य परंपरा विभाग

७. ललितकला संकाय
१. गायन कला विभाग
२. वादन कला विभाग
३. नृत्य कला विभाग
४. चित्रकला विभाग
५. मूर्तिकला विभाग
६. लोक-कला विभाग

८. कृषि संकाय
१. सस्य विज्ञान विभाग
२. कृषि अर्थशास्त्र विभाग
३. कृषि प्रसार विभाग
४. मृदा विभाग
५. कृषि रसायन विभाग
६. जैव विभाग
७. वनस्पति विभाग
८. पादप रोग निदान विभाग
९. पादप प्रजनन विभाग
१०. उद्यान विभाग

	११. शाक विभाग
	१२. कृषि यांत्रिकी विभाग
	१३. मृदा एवं जल यांत्रिकी विभाग
	१४. कृषि प्रौद्योगिकी विभाग
९. कृषि अभियंत्रण संकाय	
१०. पशु संवर्धन संकाय	१. गो संवर्धन विभाग
	२. भैंस संवर्धन विभाग
	३. बकरी संवर्धन विभाग
	४. भेड़ संवर्धन विभाग
	५. पशु प्रजनन विभाग
	६. रोग निदान एवं उपचार विभाग
	७. दुग्ध उत्पादन एवं वितरण विभाग
	८. दुग्ध पदार्थ उत्पादन विभाग
	९. दुग्ध पदार्थ विपणन विभाग
	१०. पशु खाद्य उत्पादन विभाग
११. शारीरिक शिक्षण एवं क्रीड़ा संकाय	१. योगासन विभाग
	२. व्यायाम विभाग
	३. क्रीड़ा विभाग
	४. प्राथमिक सैनिक-शिक्षा विभाग
१२. गृह विज्ञान संकाय	१. मातृत्व गुण संवर्धन विभाग
	२. गर्भवती महिला स्वास्थ्य संवर्धन विभाग
	३. शिशु संवर्धन विभाग
	४. खाद्य एवं पोषक तत्व विभाग
	५. पारिवारिक सुसंस्कार विभाग
	६. परिवार प्रबंध विभाग
	७. सामाजिक वृत्ति विकास विभाग
	८. गृह उद्योग विभाग

१३. आयुर्वेद संकाय	१. स्वास्थ्य सिद्धांत विभाग २. शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विभाग ३. रोग निदान विभाग ४. बाल रोग चिकित्सा विभाग ५. कायचिकित्सा विभाग ६. शल्य एवं शालाक्य क्रिया विभाग ७. औषधीय पौधशाला विभाग ८. औषधि निर्माण विभाग ९. स्वास्थ्य संरक्षण विभाग १०. दाई प्रशिक्षण विभाग ११. प्राकृतिक उपचार विभाग १२. द्रव्यगुण विभाग १३. रसशास्त्र एवं भैषज्य विभाग १४. स्त्रीरोग एवं प्रसूति विभाग
१४. लोक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय	१. ग्रामोद्योग विभाग २. विद्युत विभाग ३. इलेक्ट्रानिक्स विभाग ४. उत्पादन तकनीकी विभाग ५. खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग ६. व्यावसायिक प्रशिक्षण विभाग ७. कंप्यूटर तकनीकी विभाग ८. वस्त्रोद्योग विभाग ९. कृषि अभियंत्रण विभाग
१५. पर्यावरण विज्ञान संस्थान	
१६. संचार प्रशिक्षण केंद्र	
१७. महिला एवं बाल कल्याण तथा परिवार कल्याण केंद्र	
१८. योग विज्ञान अनुसंधान एवं प्रशिक्षण प्रतिष्ठान	१. योग दर्शन विभाग २. योग साधना विभाग ३. योगासन विभाग

१९. ऊर्जा अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्र
२०. विकलांग उपचार एवं पुनर्स्थापन केंद्र
२१. प्रसार - निदेशालय
२२. विधि संकाय

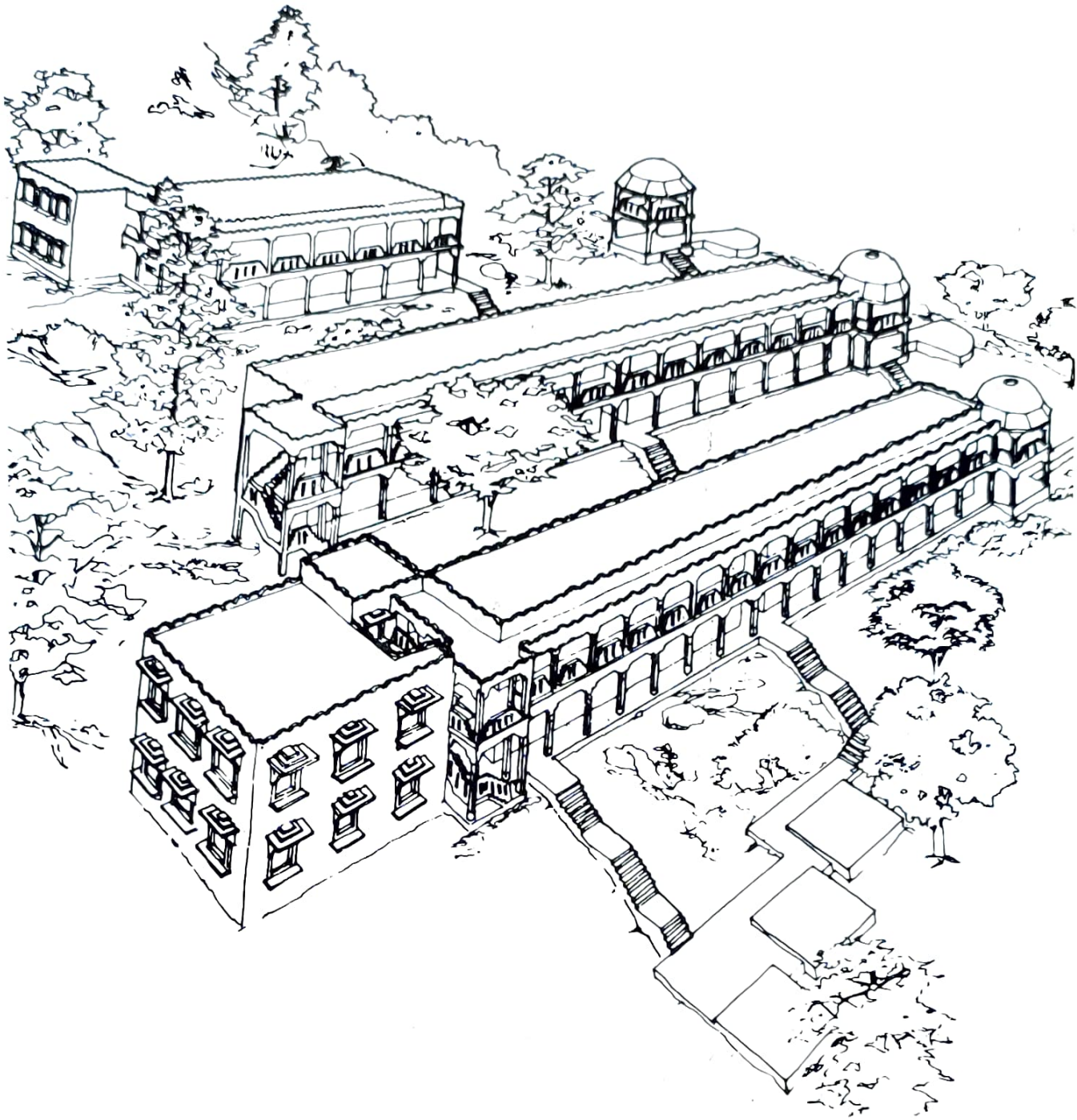

चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय

चित्रकूट धाम - ४८५३३१, जिला सतना
मध्य प्रदेश